चन्दामामा
सितम्बर १९८३

LIKE TO FLY INTO THE EXCITING WORLD OF ADVENTURE AND HUMOUR?
DOLTON
SUPER COMICS CAN TAKE YOU THERE EVERY FORTNIGHT!
IT COSTS ONLY Rs.2.00 A COPY – EVIDENTLY THE MOST EASILY AVAILABLE COMICS MAGAZINE YOU'VE EVER READ:
ITS 32 FULL COLOUR PAGES TAKE YOU THROUGH MYSTERY AND EXCITEMENT TO A RENDEZVOUS WITH THE SUPER HEROES —
SUPERMAN
&
BATMAN
DOLTON COMICS
DC
DOLTON PUBLICATIONS
MADRAS 600 026

मेरिट लिस्ट में वही बच्चा आता है जिसका मानसिक विकास औरों से बेहतर होता है...और बेहतर मानसिक विकास के लिए उसे चाहिए...

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

VOL. I, II, & III

प्रत्येक भाग में लगभग 200 प्रश्न

मानव-शरीर, जीव-जन्तु, धरती-जल-आकाश, खनिज, खेल-खिलाड़ी, सामान्य ज्ञान, भौतिक-रसायन व जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तथा वैज्ञानिक आविष्कारों से संबंधित अनगिनत प्रश्न.

प्रश्नों में से कुछ की झलक :

भाग I • प्लास्टिक सर्जरी क्या है? • महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? • क्या दैत्याकार मनुष्य भी पृथ्वी पर रहते हैं? • माउंट एवरेस्ट का नाम कैसे पड़ा? • कार्टून की शुरुआत कैसे हुई? • झील कैसे बनती है? • समुद्र व पृथ्वी के पहाड़ कैसे बने? • शनि ग्रह के छल्ले क्या हैं? • हम चलते हैं तो चांद हमारे साथ क्यों चलता है? • क्या अन्य ग्रहों से लोग पृथ्वी पर आते हैं? • बिजली का आविष्कार कैसे हुआ? • पनडुब्बी का आविष्कार कैसे हुआ?

भाग II • क्या संसार में नरभक्षी लोग भी रहते हैं? • दूध का रंग सफेद क्यों दिखाई देता है? • आकाश नीला क्यों दिखाई देता है? • विज्ञापन पट्ट कैसे चमकते हैं? • बरसने वाले बादल काले क्यों दिखाई देते हैं? • हाइड्रोजन बम क्या है? • बाल पाइन्ट पेन का आविष्कार कैसे हुआ? • डार्विन का विकासवाद क्या है? • हाथ मिलाने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ? • बच्चों को पोलियो कैसे हो जाता है? • स्तनधारी माता के शरीर में दूध कैसे बनता है? • मल हमारे शरीर में कैसे बनता है? • हमारा एक पैर दूसरे से बड़ा क्यों है? • हमारी आंखें दो क्यों हैं? • खून का रंग लाल क्यों होता है? • तोता और मैना आदमी की आवाज में कैसे बोल लेते हैं? • सांप के काटने से शरीर में जहर कैसे फैलता है? • मछलियां पानी में सांस कैसे लेती हैं? • व्हेल को मछली क्यों नहीं माना जाता? • मकड़ी अपने बनाये जाल में खुद क्यों नहीं फंस जाती? • क्या समुद्रों में भी नदियां बहती हैं? • आने वाले मौसम का पता कैसे लगाते हैं? • नारापुंज क्या है? • क्या शतरंज का खेल भारत में आरम्भ हुआ था? • क्रिकेट के खेल की शुरुआत कब हुई?

भाग III • हमारे मुंहासे क्यों हो जाते हैं? • टेस्टट्यूब बेबी क्या है? • पहाड़ों की चोटियों पर पेड़ पौधे क्यों नहीं उगते? • मिस्र के पिरामिड क्यों बनाये गये? • हमें सपने क्यों दिखाई देते हैं? • डर के कारण हमारा रंग सफेद क्यों हो जाता है? • मौत की घाटी क्या है? • हम क्यों हंसते हैं? • संगीत में सात सुर ही क्यों होते हैं? • मरने के बाद भी आदमी के बाल क्यों बढ़ते रहते हैं? • क्या कोई पहाड़ी भी रंग बदल सकती है?

बच्चे का बौद्धिक विकास तभी बेहतर होता है, जब पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त, उसके मस्तिष्क में उभरने वाले 'क्यों?' और 'कैसे?' क़िस्म के सैकड़ों-हज़ारों प्रश्नों के समुचित उत्तर उसे सही समय पर मिलते रहें?
और ऐसे ढेरों अनबूझे प्रश्नों के सही उत्तरों के लिए उसे चाहिए...

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक VOL. I, II, & III

सामान्य ज्ञान की अन्य पुस्तकों से परे हट कर अपने किस्म की एक अनूठी ज्ञानवर्धक सीरीज़

Now on sale
English Edition of
VOL. I, II, & III
Price and pages same

प्रथम भाग के तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगला व तेलगु संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं।

From the makers of Rapidex English Speaking Course

Postage FREE on any 2 Books

सभी पुस्तकें प्रमुख बुक सेलरों, ए. एच. व्हीलर के रेलवे तथा अन्य बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मिलती हैं।

पुस्तक महल® खारी बावली, दिल्ली-110006
10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002

Vandana/PM/H-48

निःशुल्क प्रवेश

चन्दामामा कॅमल रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. १५/-
दूसरा इनाम (३) रु. १०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. ५/-
१० प्रमाणपत्र
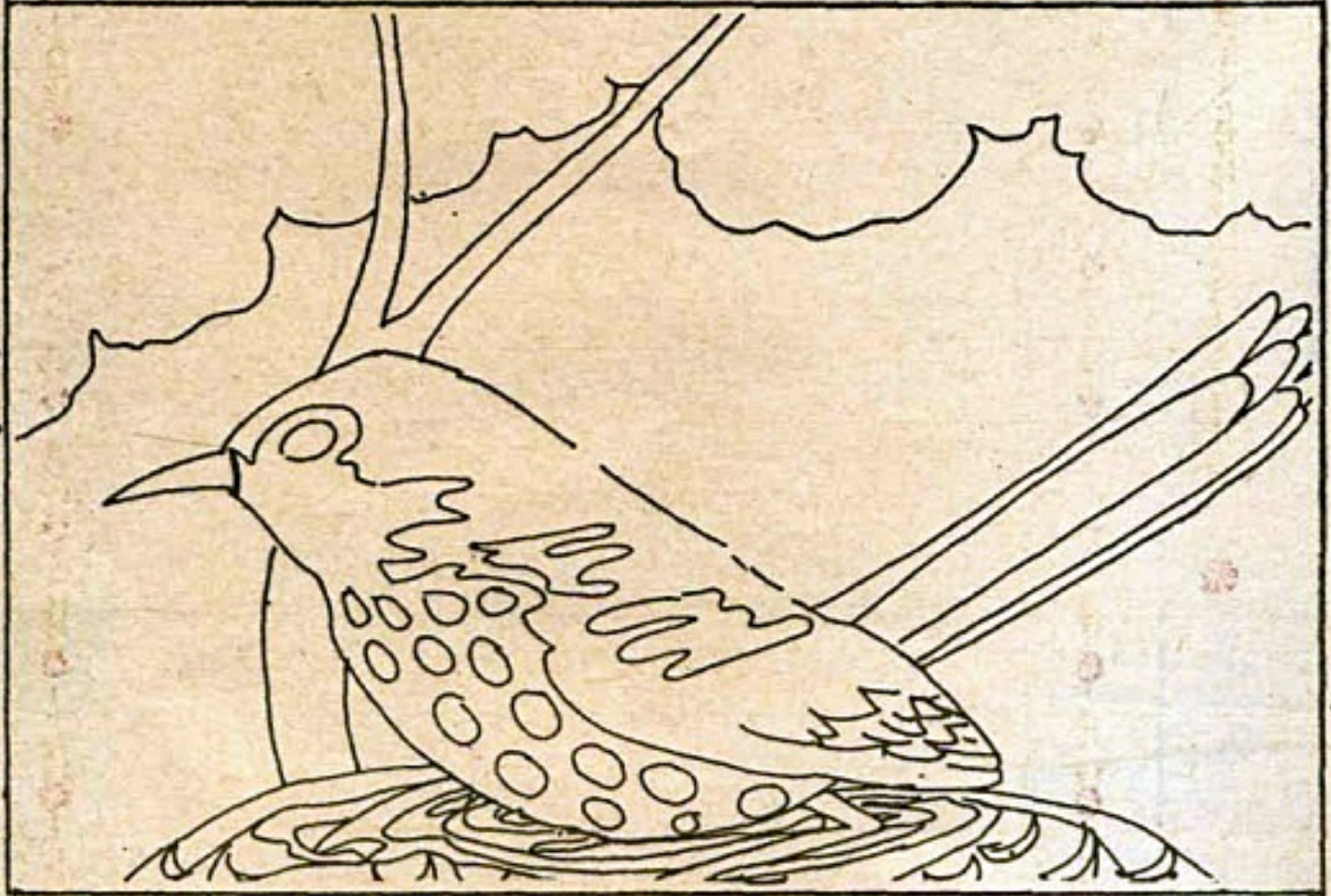
इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

चंदामामा, पो. बॉ. नं. ६६२८, कुलाबा, बम्बई ४०० ००५.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

Name: .... Age: ....

Address: ....

....

प्रवेशिकाएं 30-9-1983 से पहले पहले भेजी जायें.

CONTEST NO 32

Vision CPL 83121 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणि'
संचालक : नागिरेड्डी

भविष्य का ज्ञान हो जाने पर भी क्या हम भाग्य का लिखा बदल सकते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर है-इस मास की बेताल कथा ।

साधु-संन्यासियों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गृहस्थों पर निर्भर रहना पड़ता है । इसलिए उनके दुख-दर्द को समझना और उसे मिटाने का उपाय करना हर साधु-संन्यासी की जिम्मेदारी हो जाती है । इस सत्य का समर्थन हुआ है "सच्चे साधु का कर्त्तव्य" में ।

अमर वाणी

चलत्काष्ठो ज्वल त्यग्निः कृुद्धः सर्पोविजृंभते ।
क्षोभादेव मनुष्यस्य, शक्तेः प्रायो विजृंभणम ॥

[जलनेवाली लकड़ियों को हिलाने पर ही अग्नि प्रज्वलित होती है, क्रोध के समय साँप फुफकार उठता है । इसी प्रकार कठिनाइयों के समय ही मनुष्य की शक्ति एवं सामर्थ्य प्रकट होती है ।]

वर्षः ३६ सितम्बर १९८३ अंकः १

एक प्रतिः २-०० :: वार्षिक चन्दाः २४-००

चन्दामामा - विशेष संवाद

अंगरेज़ी बोलनेवाली मछली

इंग्लैंड में बोस्टन नगर के चिड़िया घर की एक 'सील' मछली अंगरेज़ी में बातचीत करती है ।

इसने हाल ही में अंगरेज़ी के तीन शब्द सीख लिए हैं। दस वर्ष की यह 'सील' दर्शकों के आते ही पूछ बैठती है- "हलो", "इधर आइए", "कैसे हैं ?" जब वह थक जाती है तो खीझ कर कह देती है- "यहाँ से चले जाइए ।"

चिड़िया घर के अधिकारियों के अनुसार 'सील' ने ये शब्द दर्शकों से ही सीख लिए हैं ।

हत्यारों को पकड़नेवाला बन्दर

चीन के 'यूनान' नामक नगर में एक दिन एक बन्दर लोगों को अपने साथ चलने का इशारा करने लगा। कुछ लोगों की भीड़ उसके संकेत के अनुसार उसके पीछे चल पड़ी। बन्दर उस भीड़ को एक निर्जन वन में ले गया जहाँ एक आदमी की लाश पड़ी हुई थी। बन्दर ने इसके बाद उसी भीड़ में से दो आदमियों को पकड़ लिया। पुलिस की जाँच से पता चला कि इन्हीं दोनों व्यक्तियों ने एक व्यक्ति की हत्या कर उसकी लाश जंगल में फेंक दी थी। वह बन्दर मृतक का पालतू था ।

सुदूर ग्रह से सन्देश ?

जून २२, १९८२ की घटना है। स्पेन के लाग्रोनो नामक गाँव में ज़ेवियर बास्क नाम का विद्यार्थी अपने कमरे में बैठ कर पढ़ रहा था। अचानक उसने अपने कमरे में एक गोलाकार प्रकाश देखा। ठीक उसी समय उसके कमरे में रखे रेडियो से एक विचित्र प्रकार की आवाज़ आने लगी। ज़ेवियर बास्क ने उस आवाज़ को रिकार्ड कर लिया ।

विली स्मिथ नामक वैज्ञानिक ने उस आवाज़ का अध्ययन कर यह बताया कि यह आवाज़ सुदूर ग्रहों से भेजे गये किसी सन्देश की हो सकती है अथवा उड़नतश्तरी की। किसी भी अवस्था में यह इस भूलोक की आवाज़ नहीं हो सकती ।

क्या आप जानते हैं ?

१. कौन-सा शहर 'भवनों का नगर' कहलाता है ?
२. 'सात पर्वतों का नगर' किसे कहते हैं ? उसका यह नाम क्यों पड़ा ?
३. 'स्वर्ण द्वार नगर' के नाम से कौन सा शहर विख्यात है ?
४. 'तीन राजाओं का नगर' किसे कहते हैं ?
५. किस शहर को 'साधुओं का नगर' कहते हैं और क्यों ?
६. 'सौ शिखरों का नगर' कौन-सा शहर है ?

(उत्तर के लिए पृष्ठ ६६ देखें ।)

दस साल पुराना रोग

सिंहवन में एक ही दुकान थी—बंसीधर की। वहाँ जरूरत की हर चीज़ मिल जाती, पर सब मिलावटी। तिस पर बंसीधर का क्रोधी स्वभाव ! एक तो करेला, दूसरे चढ़े नीम। फिर भी गाँववाले चुपचाप यह सब सहते और उसी दुकान से हर चीज़ खरीदते। कारण साफ था—गाँव में और कोई दुकान नहीं थी।

एक दिन बंसीधर की दुकान पर एक परदेसी आया। उसकी मिलावटी चीजों को देखकर उसने कहा- "क्या इस गाँव में बिना मिलावट के सामान नहीं मिलते ?"

यह सुन कर बंसीधर का क्रोध भड़क उठा। उसने परदेसी को खरी-खोटी सुनाकर कहा- "तुम शुद्धता और स्वच्छता की बात करते हो ? आइने में अपना चेहरा तो देखो। तुम्हारे अंग और वस्त्र कितने गन्दे हैं ? सच तो यह है कि तुम्हारे हाथ लगने से ही मेरे सामान अशुद्ध हो गये हैं। मैं रहम करके तुम्हें छोड़ देता हूँ। पड़ोसी गाँव में रहनेवाले मेरे दामाद के सामने ऐसी बात बोलोगे तो वह तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर देगा।"

ये बातें सुनकर परदेसी का पारा भी चढ़ गया। आँखें लाल-पीली करके बोला- "क्या तुम ग्राहकों से इसी प्रकार बर्ताव करते हो ? यदि तुम जानते कि मैं यहाँ के राजा विजय भास्कर का मंत्री रामभूषण हूँ और वेश बदल कर यहाँ आया हूँ तो ऐसा कहने का क्या तुम्हें साहस होता ?" मंत्री का नाम सुनते ही बंसीधर भय से चीख़ कर बेहोश हो गिर पड़ा।

मंत्री सीधा मुखिया के घर पहुँचा और अपना परिचय देकर बोला- "तुम्हें गाँव का अधिकारी किसलिए बनाया गया है ? इसीलिए न कि गाँव के अन्याय और भ्रष्टाचार को रोको। मैंने बंसीधर की करतूतें अपनी आँखों से देख

ली हैं। मिलावटी सामान बेचने के अपराध में उसे तथा इस भ्रष्टाचार को देख कर चुपचाप रहने के लिए तुम्हें भी कठिन दण्ड दिया जायेगा।"

मुखिया ने धैर्य पूर्वक मंत्री की बातें सुनीं और नम्रता पूर्वक कहा- "महानुभाव! मिलावट का सामान बेचने में बसीधर का कोई दोष नहीं है। वह जैसा माल लाता है, वैसा हीं बेचता है। अपने घर पर ऐसा करते हुए कभी नहीं पकड़ा गया। इसलिए सबूत के अभाव में उसके विरुद्ध आज तक कोई कार्यवाही न कर सका।

"लेकिन मैं यह मानता हूँ कि उसने आप के साथ अभद्र व्यवहार किया है। यह उसका घोर अपराध है। इसे क्षमा नहीं किया जा सकता। शायद उसे पता नहीं होगा कि आप कौन हैं। इसलिए यह उसके द्वारा अज्ञानवश किया हुआ अपराध है। आप कृपया इस बात को मन में न रखिए, इस को क्षमा कर दीजिए!"

यह सुनकर मंत्री थोड़ा शान्त हुए। फिर बोले- "मिलावट के सम्बन्ध में तुम्हारी बातें सच हो सकती हैं। पर ग्राहकों के साथ भद्रता पूर्वक व्यवहार करना तो उसे आना चाहिए। और इस असभ्यता के लिए उसे पाठ पढ़ाना आवश्यक है।"

मुखिया ने मंत्री का मन जान कर बंसीधर को तुरन्त बुलवा भेजा। बंसीधर आते ही मंत्री के पैरों पर गिरकर बोला- "अनजान में मुझसे बड़ी भूल हो गयी। मैं आपको जानता न था। लेकिन माफ़ी नहीं मागूँगा। इसके लिए मुझे कोड़ों की सख्त सज़ा दीजिए। मैं यह भी मानता हूँ कि चाहे कोई भी ग्रहक साधारण व्यक्ति हो, या महान, सब के साथ भद्रता पूर्ण व्यवहार करना मेरा कर्तव्य था। मैं अगर सजा भोग लूँ, तो यह दूसरों के लिए भी एक अच्छा सबक़ सिद्ध होगा!"

बंसीधर की विनम्रता पर मंत्री बहुत खुश हुए। बोले- "मुझे अपने व्यक्तिगत अपमान का दुख नहीं है। इसके लिए मैंने तुम्हें क्षमा कर

दिया। लेकिन अपने ग्राहकों के प्रति तुम आदर नहीं दिखाते, इस अपराध को क्षमा करने का अधिकार सिर्फ़ जनता को ही है। आज शाम को जनता के दरबार में ही इसकी सुनवाई की जायेगी। अब तुम जा सकते हो।"

अब बंसीधर का मन फिर गया और वह दण्ड भोगने से बचने का उपाय सोचने लगा।

बंसीधर सोचने लगा कि इस खतरे से अब कैसे बचे ? गाँव के अधिकाँश लोग नाराज़ थे। उनके सामने यदि मंत्री सुनवाई करें तो निश्चय ही उसे कठिन दण्ड मिलेगा।

शाम होने से पहले वह घर-घर गया और अपनी विपदा सुनाकर इस संकट से उबारने की विनती की। इसके बदले कुछ लोगों के छोटे-मोटे कर्जे रद्द करने का वादा किया और कुछ लोगों को सस्ते दामों पर सामान देने का आश्वासन दिया।

अधिकांश लोगों को उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे मदद करने का वचन दिया। उन्हें यह भी डर था कि यदि बंसीधर को कड़ी सज़ा दी गई तो जरूरत की चीजें कहाँ से खरीदेंगे। दूसरी दुकान पता नहीं कब खुले!

उस दिन शाम को ग्रामवासियों के सामने बंसीधर ने यों कहा- "वैसे मैं शान्त स्वभाव का आदमी हूँ। अनावश्यक किसी से झगड़ा नहीं करता। लेकिन कल से मेरी तबीयत ठीक

नहीं है। जब मैं अस्वस्थ रहता हूँ तभी कुछ चिड़चिड़ा हो जाता हूँ। यह बात सभी लोग जानते हैं।"

ग्रामवासियों ने बंसीधर के कथन को सही बताया। इस पर मंत्री सन्तुष्ट हो कुछ कहने के लिए खड़े हुए। तभी बंसीधर का नौकर दौड़ा-दौड़ा आया और उसके पैरों पर गिर कर कहने लगा- "मालिक। आप रोज बात-बात पर मुझे डाँटते थे। यह देख मैं समझता था कि आप दुष्ट स्वभाव के हैं। किन्तु आज मालूम हुआ कि यह मेरी भूल थी। कभी-कभी गुस्से में आकर सोचता था-आप का सर फोड़ दूँ। यह तो अभी मालूम हुआ कि आप के चिड़

चिढ़ाने और गाली-गलौज देने का असली कारण आप की बीमारी है। मेरी भूल को माफ़ कर दें मालिक !"

बंसीधर ने नौकर को उठाते हुए प्यार से कहा- "कौन भूल नहीं करता ? चलो, मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ।"

इसके बाद नौकर मंत्री के पाँव पड़ कर बोला- "आज मुझे मालूम हुआ कि बीमारी के कारण ही मेरे मालिक खीझे रहते हैं। मैं इनके यहाँ दस साल से हूँ। दस साल से रोज ही मुझे बिना बात के गाली-गलौज दे रहे हैं। इसका यह मतलब है कि ये दस साल से बीमारी से परेशान हैं। इनकी बीमारी पुरानी होती जा रही है। इसलिए कृपा करके मेरे मालिक का इलाज करवाइए।"

नौकर की बातों से मंत्री को बंसीधर की असलियत मालूम हो गयी। उन्होंने नौकर को बाँह पकड़ कर उठाते हुए कहा- "तुम्हारे मालिक की बीमारी के इलाज के लिए किसी वैद्य की आवश्यकता नहीं है। मैंने उसका इलाज कर दिया है। मेरी दवा का असर हुआ या नहीं, यह बात तुमसे पता कर लूँगा।"

इसके बाद मंत्री बंसीधर को आदेश देते हुए बोले- "आज से तुम्हारी दुकान में कोई मिलावटी चीज़ नही बिकेगी। यदि तुम्हारी खरीदी हुई चीजों में मिलावट हो तो उसे भी शुद्ध करके बेचना होगा।"

थोड़ी देर रुककर मंत्री फिर बोले- "लोगों के प्रति तुम्हारे व्यवहार का पता लगाने के लिए महीने में एक बार मेरा सेवक तुम्हारे नौकर के पास आया करेगा।"

मंत्री के जाने के बाद न केवल बंसीधर के स्वभाव में परिवर्तन हुआ, बल्कि शुद्ध वस्तुओं के लिए उसकी दुकान राज्य भर में प्रसिद्ध हो गई।

इधर बंसीधर का नौकर सबसे आश्चर्य पूर्वक कहता-फिरता- "मेरे मालिक की दस साल पुरानी बीमारी को मंत्री जी ने एक ही दिन में ठीक कर दिया।"

४

[पद्मपाद और पिंगल भल्लूक पहाड़ियों की ओर चल पड़े। थोड़ी देर चलने के बाद पिंगल स्नान करने के लिए एक सरोवर के पास पहुँचा। वहाँ एक शिला से भल्लूक केतु बँधा हुआ था। भल्लूक केतु ने पिंगल से मदद माँगी। पिंगल उसकी मदद करने उसके पास जा ही रहा था कि एक कठोर आवाज़ सुन कर चौंक पड़ा।]

जैसे ही पिंगल भल्लूक केतु की ओर बढ़ा, एक कठोर आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने पीछे मुड़ कर देखा- वह पद्मपाद था। पद्मपाद को देख कर उसके हाथ का पत्थर फिसल कर सरोवर में गिर गया जिससे बड़ी भयंकर आवाज़ आई।

पद्मपाद ने उसी कठोरता से पूछा- "जानते हो पिंगल, यह कौन है ?"

पिंगल ने एक बार भल्लूक केतु की ओर नज़र दौड़ाई और फिर सिर झुका लिया।

भल्लूक केतु ने शंका और भय की नज़र से पद्मपाद की ओर देखा- "स्वामि ! आप कौन हैं जिसने उस युवक को एक बड़े पुण्य कार्य से रोक दिया ?"

"पुण्य कार्य ?" पद्मपाद ठठाकर हँस पड़ा। "मैं जानता हूँ तुम कौन हो ? तुम्हारी सारी कहानी मैं पहले ही जान चुका हूँ।"

भल्लूक केतु कुछ कहने ही वाला था कि

पिंगल बीच में बोल पड़ा- "इसका नाम भल्लूक केतु है। भल्लूक पर्वतों का कभी यह मालिक था। सुना है, किसी मांत्रिक ने इसकी यह दुर्दशा की है।"

"हाँ, यह बात सच है, पर जानते हो पिंगल, उस मांत्रिक का नाम क्या है?" पद्मपाद ने पुछा। "नहीं।" पिंगल ने कहा।

"इस भल्लूक केतु को बन्दी बना कर इस शिला से बाँधने वाला व्यक्ति महान मांत्रिक महामाय है।" यह कहते हुए पद्मपाद ने भल्लूक केतु की ओर गहरी नज़र से देखा।

यह सुनते ही भल्लूक केतु क्रोधित हो उठा। दाँत पीसता हुआ बोला- "तुम कौन हो और मेरे बारे में कैसे जानते हो? महामाय की जानकारी तुम्हें किसने दी? कहीं तुम कोई मांत्रिक तो नहीं हो?"

"हाँ-हाँ, मैं भी एक मांत्रिक हूँ। मेरा नाम पद्मनाद है। मैं जानता हूँ, तुम बड़े बलवान और चालाक हो। तुम्हें बन्दी बनानेवाले महामाय की समाधि पर अब मैं हमला करने जा रहा हूँ।" पद्मपाद ने जवाब दिया।

"विश्वास नहीं होता कि आप सच कह रहे हैं। यदि यह सच है कि आप महामाय की समाधि पर हमला करने जा रहे हैं तो आप जरूर कोई महा मांत्रिक होंगे। मैं महामाय का जानी दुश्मन हूँ। मैं आप के इस काम में बहुत उपयोगी हो सकता हूँ। यदि इस बन्धन से मुझे स्वतंत्र कर दीजिए तो आप का आजीवन दास बना रहूँगा।" भल्लूक केतु ने अनुरोध करते हुए कहा।

"छल-कपट से भरी इन बातों में आने वाला मूर्ख मैं नहीं हूँ।" पद्मपाद की आवाज़ में दृढ़ता थी।

पिंगल तभी फिर बीच में बोल पड़ा- "मैं समझता हूँ कि हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। सुना है, किसी शाप के कारण यदि यह वचन-भंग करेगा तो इसके सिर के टुकड़े हो जायेंगे।"

"जब तक महामाय की मंत्र-शक्तियाँ हमारे

अधीन नहीं आ जातीं तब तक भल्लूक केतु को मुक्त करना खतरनाक होगा। तुम इसकी बातों पर विश्वास करके अपने को खतरे में न डालो।" पद्मपाद ने पिंगल को समझाया।

भल्लूक केतु ने पद्मपाद से पुनः कुछ अनुरोध करना चाहा, किन्तु पद्मपाद उसको रोकते हुए बोला- "भल्लूक ! तुम अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से मुझे धोखा नहीं दे सकते। महामाय जिस टूटे मंदिर में समाधिस्थ हुआ है, उसमें प्रवेश करने के बाद ही तुम्हें इस बन्धन से छुड़ाऊँगा। तब तक तुझे यहीं पर रहना होगा।" यों कहकर पद्मपाद वापस जाने के लिए पीछे मुड़ पड़ा। पिंगल ने उसका अनुसरण किया।

इसके बाद वे दोनों जंगल से बाहर आये। वहाँ उनके वाहन गधे नहीं थे। पिंगल ने पद्मपाद से पूछा- "हमारे पिशाच वाहन कहाँ हैं ? ये इसी मैदान में चर रहे थे।"

"अरे यार ! ये सचमुच के गधे तो नहीं हैं जो घास से पेट भर लेंगे। वे अपने शिकार की टोह में गये हैं। लेकिन हम लोगों की पेट-पूजा का क्या होगा ?" यह कहते हुए पद्मपाद मैदान की हरी मखमली घास पर लुढ़क गया।

पिंगल उसके पास ही बैठते हुए बोला- "हाँ, हाँ, पद्मपाद, मेरे पेट में भी चूहे कूद रहे हैं। हम लोग अपने साथ खाना लाना तो भूल ही गये !"

पद्मपाद को पिंगल की हालत पर तरस आ गया। हल्का सा मुस्कुरा कर एक थैली की ओर संकेत करता हुआ बोला- "अच्छा, ला, वह थैली इधर बढ़ा।"

पिंगल ने उस थैली में हाथ डाल कर टटोला, किन्तु कुछ न पाकर निराश हो गया। पद्मपाद ने तब उस थैली को अपने हाथ में लेकर पूछा- "पिंगल, तुम्हें किस प्रकार का भोजन पसन्द है ? तुम्हारे मन पसन्द व्यंजन क्या हैं ?"

"उफ़ ! किस प्रकार का ? भूख से तड़पने वालों के लिए तो रूखा-सूखा भोजन ही लड्डू

के समान है। पर इस थैली में धरा ही क्या है? वह तो एक-दम खाली है!'' पिंगल ने समझा पद्मपाद उसके साथ मज़ाक कर रहा है।

पद्मपाद ने थैली का मुँह खोला और उसके अन्दर झाँक कर देखा। फिर धीरे-से कोई मंत्र जाप कर बोला- ''पिंगल, अब थैली के अन्दर देखो।'' यह कह कर उन्होंने पिंगल की ओर थैली बढ़ा दी।

पिंगल ने बड़ी उत्सुकता से थैली के अन्दर हाथ डाला। उसका हाथ चाँदी के एक गर्म बर्तन से छू गया। उसमें ताजा, गरम-गरम खाना पड़ा था। उस ने बड़े आश्चर्य से पद्मपाद की ओर देखा।

पद्मपाद मुस्कुराता हुआ बोला- ''इस बर्तन में तुम्हारे लिए तरह तरह के व्यंजन और मिष्टान्न पड़े हैं। जल्दी से इन्हें बाहर निकालो और पेट-पूजा शुरू करो।''

पिंगल ने उस पात्र से लगभग पच्चीस प्रकार की सब्जियाँ तथा कई तरह के पकवान निकाले और दोनों ने सन्तुष्ट होकर खाना खाया। छक कर खाना खाने के बाद पिंगल को बहुत ज़ोर से प्यास लगी। तभी पास में उसे एक सुन्दर झरना दिखाई दिया। वह प्यास बुझाने के लिए झरने का पानी पीने ही जा रहा था कि पद्मपाद ने उसे रोक दिया।

''यह जादू का पानी है। इसे पीते ही बेहोश हो जाओगे। तुम्हारे लिए मधुर और सुगन्धित जल देखो इस थैली में रखा है।'' पद्मपाद ने पिंगल को चेतावनी देते हुए उसे झरने पर से वापस बुला लिया। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसी थैली में एक अन्य पात्र में बहुत मीठा जल भी पड़ा हुआ था। वह यह देखकर और भी चकित रह गया कि जहाँ वह अभी-अभी पानी पीने गया था, वहाँ कोई झरना नहीं था।

पानी पीने के बाद उसे आराम की इच्छा होने लगी। उसके मन की बात ताड़कर पद्मपाद ने एक वृक्ष के नीचे मंत्र से उसके लिए बिस्तर तैयार कर दिया। पिंगल खाना खाकर उस

बिस्तर पर नींद में सो गया। तब तक पद्मपाद घूम फिर कर उस स्थान का निरीक्षण करता रहा और यह सोचता रहा कि अब उसे आगे क्या करना है। थोड़ी देर तक विश्राम करके फिर यात्रा के लिए तैयार हो गये।

पद्मपाद ने चुटकी भर मिट्टी लेकर मंत्र पढ़ा, फिर उसे ज़मीन पर छिड़क दिया। तुरन्त डरावनी आवाज़ के साथ पृथ्वी फट गई और उसके भीतर से दो पिशाच गधे रेंकते हुए ऊपर आ गये। इन गधों पर सवार होकर वे दोनों भल्लूक पहाड़ियों की ओर चल पड़े।

पद्मपाद ने रास्ते में पिंगल को समझाते हुए कहा- "अब हम बहुत खतरनाक प्रदेश में प्रवेश कर रहे हैं। यह मांत्रिकों और जादूगरों का देश है। यहाँ एक-एक कदम फूँक-फूँक कर रखना होगा।"

दो-तीन घण्टों की यात्रा के बाद आसमान में फैलते हुए कुछ काले बादल दिखाई दिये।

पिंगल ने बादलों की ओर इशारा करते हुए पूछा- "ये बादल कभी-कभी धुआँ की तरह लगते हैं।"

पद्मपाद ने उन बादलों को ध्यान से देखकर कहा- "न तो ये बादल हैं और न धुआँ। भल्लूक पहाड़ियों पर पहरा देने वाले राक्षस ही काले बादलों की तरह दिखाई दे रहे हैं। शायद हमारे आने की खबर उन्हें मिल गई है और इसीलिए वे हमें डराने की कोशिश कर रहे हैं।"

तभी अचानक लगभग पचास गज की दूरी पर काला धुआँ गोल आकार में पृथ्वी पर से ऊपर उठा। यह देखकर पिंगल डर गया। तब पद्मपाद ने एक मंत्र पढ़कर अपने गधे को उसी दिशा में दौड़ाया। कुछ ही क्षणों में वह धुआँ गायब हो गया।

पद्मपाद पिंगल की ओर मुड़ कर उसे एक तलवार देते हुए बोला- "डरो मत। तुम्हें आत्म रक्षा के लिए यह तलवार दे रहा हूँ। इसकी मदद से तुम किसी भी राक्षस को मार सकते हो।"

तभी उन दोनों के बीच की धरती काँप गई। पद्मपाद और पिंगल के गधे हटकर एक तरफ़ हो गये। दूसरे ही क्षण लम्बे-लम्बे दाँतों वाला तथा जटाधारी शरीर वाला एक हाथी चिंघाड़ता हुआ पिंगल पर हमला कर बैठा। पर पिंगल तनिक भी नहीं घबड़ाया और हाथी पर कूद पड़ा।

फिर उसने अपनी तलवार से प्रहार करके उसे घायल कर दिया। हाथी पीड़ा से कराहने लगा। फिर काले धुएं में बदल कर बवंडर जैसा चक्कर काटता हुआ दूर भाग गया।

तभी उसने देखा कि उससे भी भयंकर हाथी हवा में से प्रकट हुआ और उसकी ओर झपटा। इस हाथी पर भी पिंगल ने उसी फुर्ती और साहस से आक्रमण किया और उसकी सूंड को घायल कर दिया।

"शाबाश पिंगल! साहसी युवक का व्यवहार ऐसा ही होना चाहिए। लातों के भूत बातों से नहीं सुनते, यह कहावत झूठी नहीं है।

"मैंने जो तुम्हें तलवार दी है, उसमें मंत्र शक्ति नही है। लेकिन यह बात यदि मैंने पहले ही बता दी होती तो इतनी बहादुरी से उस मायावी हाथी का मुक़ाबला नहीं कर पाते। शायद अब समझ गये हो कि साहसी और बहादुर को कोई ताक़त नहीं झुका सकती।"

"कठिनाइयाँ और बाधाएं कमजोरों और कायरों के लिए बनी हैं। जो खतरों से डरते नहीं, उनके लिए खतरे खेल बन जाते हैं और मौत मज़ाक़ बन जाती है। हौसला रखने वाले ही जिन्दगी में कुछ हासिल कर पाते हैं। तुम
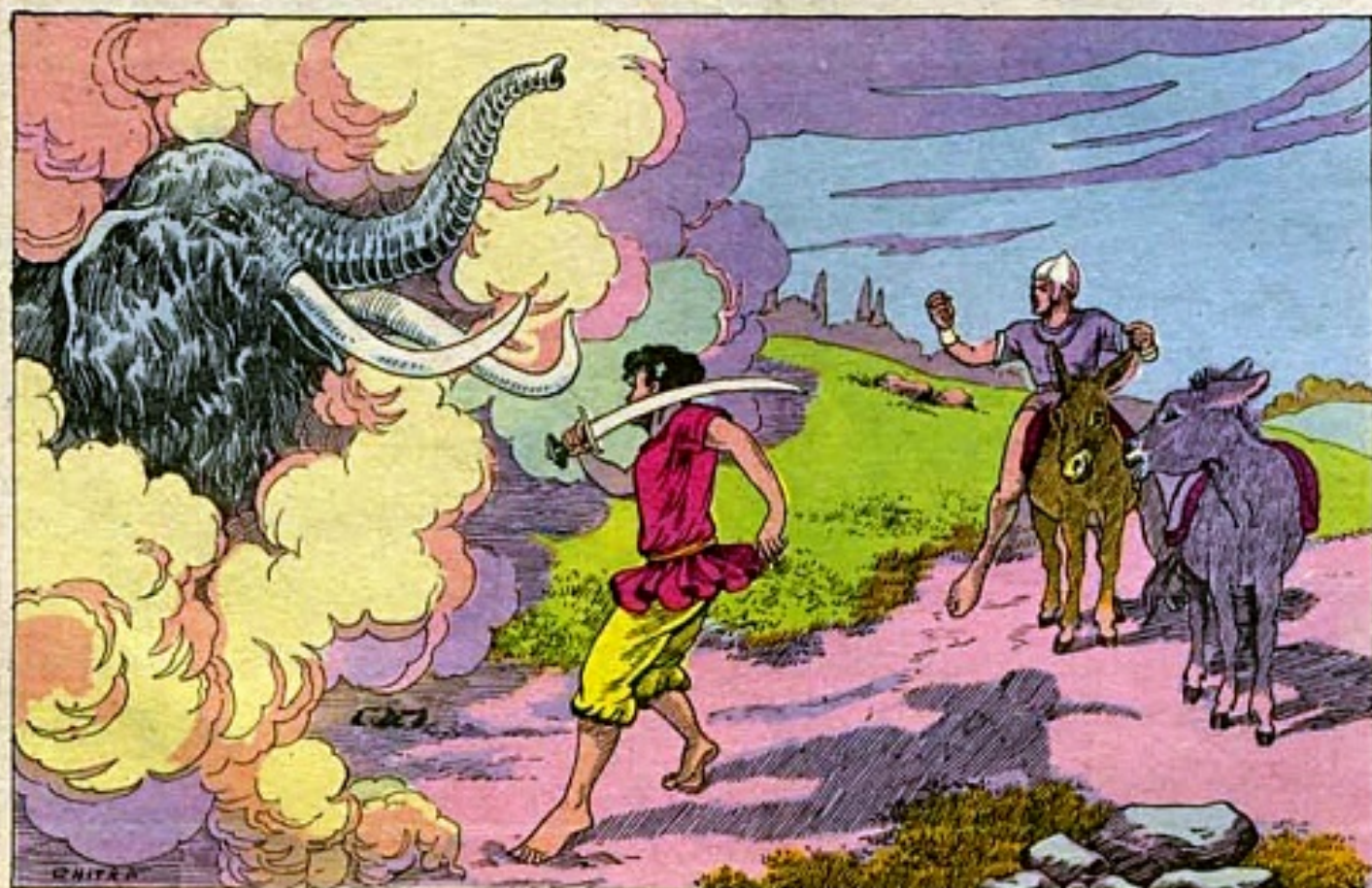
एक सच्चे साहसी और बहादुर युवक हो और जीवन में कुछ कर गुजारने की ताक़त रखते हो।" पद्मपाद ने पिंगल का साहस बढ़ाते हुए कहा।

पिंगल अपनी तलवार की ओर देख कर हँस पड़ा। "कोई बात नहीं, यदि यह तलवार कोई मंत्र शक्ति नहीं रखती। मैं इसी तलवार से हज़ारों राक्षसों का सामना कर सकता हूँ। पाताल-भैरवी की जय !" फिर अपनी तलवार को हवा में उछालते हुए कहा।

पिंगल की बहादुरी से पद्मपाद बहुत प्रभावित हुआ। पिंगल की ओर देखकर स्नेह से बोला- "पिंगल ! हम लोग अब भल्लूक पहाड़ियों के पास आ गये हैं। हम लोगों का असली काम तो इन पहाड़ियों के पार घाटी में है। वहाँ तक पैदल जाने में बहुत समय लगेगा। दूसरे कंटीली झाड़ियों और कंकड़ पत्थरों से भरे रहने के कारण रास्ता भी कठिन है। इसलिए इन पिशाच-गधों को पहाड़ियों पर से उड़ा कर घाटी में उतर जायेंगे।"

तभी दोनों गधे हवा में तैरने लगे। कुछ ही मिनटों में पहाड़ी की चोटियाँ पीछे छूट गईं और वे घाटी में एक नदी के किनारे उतर गये। उनके उतरते ही दोनों गधे गायब हो गये।

पद्मपाद ने उसके बाद नदी में प्रवेश कर अपने हाथ से जल को हिलाते हुए कुछ मंत्रों का उच्चारण किया। इससे नदी में बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं और ये ऊपर उठकर धुआँ फैलाने लगीं। पिंगल यह सब देख कर हैरान

था ।

थोड़ी देर बाद पद्मपाद नदी से निकल कर बाहर आया और पिंगल से थैली में रखे शीशे का जग लाने को कहा ।

पिंगल ने शीघ्र ही उसके आदेश का पालन किया । उस जग में महामाय के दो शिष्य मगरमच्छ के रूप में कैद थे । उनकी ओर तीखी नज़र से देखते हुए पद्मपाद गरज कर बोले- "अब भी तुम लोग अपने असली रूप में आते हो या तुम्हें जलाकर भस्म कर नदी के जल में मिला दूँ ?"

पद्मपाद की गरज सुनते ही शीशे का जग टूट गया और उसके टुकड़े तितर-वितर हो हवा में गायब हो गये । और जग में से दो काले आकार बाहर निकले । वे पद्मपाद को प्रणाम करके बोले- "हे महा मांत्रिक ! हम आप के दास हैं । आज्ञा दीजिए, हमें क्या करना है ?"

"महामाय की समाधि वाले उजड़े मंदिर तक पहुँचने का हमें रास्ता चाहिए । इससे पहले तुम लोग इस नदी के जल को सुखा दो ।" पद्मपाद बड़ी कठोर आवाज में आज्ञा देते हुए बोले ।

महामाय के चेले एक दूसरे का चेहरा देखते हुए जवाब देने में हिचकिचाने लगे । तभी पद्मपाद फिर गरज पड़े- "क्या तुमने मेरा आदेश नहीं सुना ?"

महामाय के चेले थर-थर काँपने लगे । फिर झुक कर बोले- "महानुभाव ! इस नदी के जल को सुखाने के लिए अथवा महामाय की समाधि वाले उजड़े मन्दिर में प्रवेश पाने के लिए जरूरी है कि पिंगल नामक मछुआरा यहाँ हाजिर हो ।"

"लो देखो । यही वह मछुआरा है । इसका नाम पिंगल है ।" पिंगल की ओर संकेत करते हुए पद्मपाद ने कहा ।

महामाय के शिष्यों ने पिंगल की ओर आश्चर्य से देखा । फिर बोले- "जो आज्ञा ! अभी हम आप की आज्ञा का पालन करते हैं ।" इतना कह कर वे शिष्य अदृश्य हो गये । (क्रमशः)

मौत का खतरा

दृढ़व्रती विक्रम पेड़ के पास लौट आये। पेड़ पर से शव उतारा और उसे कन्धे पर डाल कर चुपचाप श्मशान की ओर जाने लगे। इस पर शव में स्थित बेताल बोला- "कुछ लोगों की शक्ति और गुण, विपरीत परिस्थितियों के कारण, उनके विकास में सहायक न होकर बाधक हो जाते हैं। आप भी कुछ इसी तरह इस आधी रात के समय ऐसा कठिन काम कर रहे हैं। परोपकार करने के लिए राजदरबार में जाने वाला ज्योतिषी रामशास्त्री भी आप की ही तरह मुसीबत में फँस गया था। रास्ते की थकावट दूर करने के लिए उसकी कहानी सुनाता हूँ। ध्यान से सुनिये।"

इतना कह कर बेताल कहानी यों सुनाने लगा- "पुष्कर नगर में एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। नाम था रामशास्त्री। इनकी भविष्यवाणी एक-एक अक्षर सच निकलती थी। दूर-दूर के नगरों से अपना भाग्य जानने के लिए इनके

बेतालकथा

पास आने लगे। धीरे-धीरे सारे देश में इनका यश फैल गया। एक दिन इनका नाम राजा विनय सेन के कानों तक भी आ पहुँचा। राजा ने रामशास्त्री को बुलवा भेजा।

राजा विनयसेन साठ से ऊपर हो चुके थे। फिर भी स्वास्थ्य अच्छा था। इनका पुत्र सूर्यसेन बीस वर्ष का हो चुका था। विनयसेन सोच रहे थे कि बेटे को राज-भार सौंप कर अब विश्राम करेंगे। किन्तु दरबारी ज्योतिषियों का विचार था कि राजा कुछ वर्ष और बने रहें क्यों कि एक तो उनकी आयु सौ वर्ष की है और ईश्वर की कृपा से अभी उनका स्वास्थ्य अच्छा है। दूसरे, राज कुमार अभी इस योग्य नहीं है कि राज्य का भार संभाल सके।

इसी बीच राजा को यह समाचार मिला कि राज कुमार सूर्यसेन विलासी होने के कारण राज्य-भार से घबराता है। इसीलिए उन्होंने ज्योतिषियों को ऐसी सलाह देने के लिए बाध्य किया है। राजा का दरबारी ज्योतिषियों पर से विश्वास जाता रहा। तभी उन्होंने रामशास्त्री का नाम सुन कर उसे दरबार में बुलवा भेजा।

राजा विनयसेन ने संक्षेप में अपना हाल बता कर कहा- "शास्त्री जी! आप मेरे तथा मेरे पुत्र की जन्म कुण्डली देखकर किसी प्रलोभन या प्रभाव में न पड़ कर सच-सच फल बतायें।

रामशास्त्री ने सबसे पहले राजकुमार सूर्यसेन की कुण्डली देख कर कहा- "इस कुण्डली के अनुसार आज ही आधी रात को राजकुमार एक भील-कन्या से विवाह करेगा।"

राजा इस भविष्यवाणी से घबरा गये। बोले- "महल के विलासी जीवन में उसे डूबे देख कर मैंने ही उसे शिकार पर जाने के लिए उत्साहित किया। यदि यह भविष्यवाणी सत्य है तो हमें इस विवाह को रोकना पड़ेगा।"

राजा इतना कह कर जंगल की ओर चल पड़े। मार्ग में अनेक बाधाएँ आईं। राजा को लुटेरों का सामना करना पड़ा और उनका घोड़ा भी बीमार पड़ गया। किसी प्रकार राजा जब राजकुमार के शिविर में पहुँचे तो विवाह सम्पन्न

हो चुका था। भविष्यवाणी सच हो कर रही।

राजा विवाह संस्कार को पवित्र बन्धन मानते थे, इसलिए उन्होंने भील-कन्या को अपनी युवरानी के रूप में स्वीकार कर लिया।

राजधानी लौटने पर सूर्यसेन को जब मालूम हुआ कि रामशास्त्री ने ही उसके विवाह की भविष्यवाणी की थी तो उसने रामशास्त्री को बुलवा कर कहा- "मैंने आप की ज्योतिष-विद्या का चमत्कार देख लिया है। मैं अभी कुछ और वर्षों तक राज्य की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता। इसके अनुसार ही आप पिताजी को सलाह दीजिए। इसके बदले मैं आप को मुँह-मांगा इनाम दूँगा।"

रामशास्त्री ने राज कुमार की बात पर ध्यान नहीं दिया। उल्टा उसने राजा को यह सलाह दी कि राजकुमार को यथाशीघ्र राज्य की जिम्मेदारी सौंप दीजिए और आप अपनी निगरानी में कुछ दिनों तक उसे शासन करने दीजिए।

राजा अब उसे गद्दी देने में जल्दी नहीं करना चाहते थे क्योंकि उनकी नज़र में राजकुमार सचमुच योग्य नहीं हो पाया था। राजा ने अपनी चिंता प्रकट करते हुए रामशास्त्री से कहा- "पंडितजी! मेरे पुत्र ने अपने कर्मों से मेरे राज वंश की प्रतिष्ठा को कलंकित कर दिया है। यह स्वच्छन्द और विलासी है। राज्य की जिम्मेदारी अभी इसके बस की बात नहीं।"
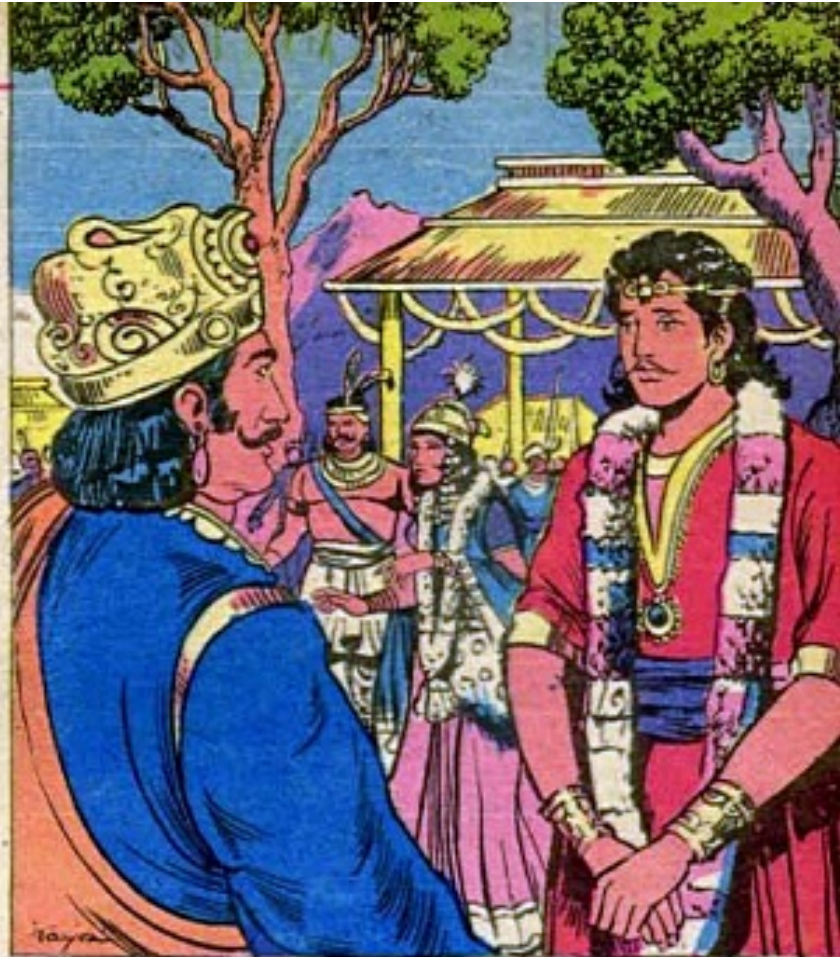
"महाराज, आप चिंता न करें। आप की पुत्र-वधू थोड़े ही दिनों में राजमहल और राजदरबार के आचार-विचार को पूरी तरह समझ जायेंगी और उसी की सहायता से आप के पुत्र आप के यश को और बढ़ायेंगे। इसलिए मैं कहता हूँ कि जितना शीघ्र उस पर जिम्मेदारी सौंप देंगी, उतना ही आप के मार्ग दर्शन में उसे राज-काज सीखने का अवसर मिलेगा।"

काफी देर तक विचार-विमर्श के बाद राजा ने रामशास्त्री की सलाह मान ली। युवराज का

राजतिलक कर दिया गया ।

राजा बनते ही सूर्यसेन ने रामशास्त्री को बुला कर कहा- "विवाह के बाद मैं कुछ दिनों तक मौज-मस्ती में रहना चाहता था लेकिन मेरी इच्छा की परवाह नहीं करके आपने मुझ पर राज्य की जिम्मेदारी सौंपने की सलाह दी । इसके लिए आप को सज़ा क्यों न दी जाये ?"

रामशास्त्री ने नम्रतापूर्वक कहा- " यह सब मैंने आप की ही भलाई के लिए कहा है। आप के पिता की उम्र एक वर्ष और है। उनके रहते आप राज-काज संभाल लें तो कुछ दिनों तक उनका मार्गदर्शन मिलता रहेगा। यदि इस तरह आप अपनी जिम्मेदारी से भागते रहे तो महाराज की आँखें बन्द होते ही दरबारी आप के विरुद्ध षड्यंत्र कर राज्य हथिया लेंगे ।"

लेकिन फिर भी सूर्यसेन ने इन्हें कारागार में डाल दिया । यह समाचार सुनकर महाराजा विनयसेन को बहुत दुख हुआ । कारागार में जाकर रामशास्त्री से बोले- " इस बात का मुझे खेद है कि सच्चाई और ईमानदारी के कारण आप को कारागार भुगतना पड़ा। मैं चाहूँ तो अभी इसी घड़ी आप को मुक्त कर सकता हूँ। किन्तु सूर्यसेन को बहुत बुरा लगेगा और वह आप से और नाराज़ हो जायेगा। अब आप ही बताइए, मैं क्या करूँ ?"

"महाराज ! अभी मेरे भाग्य में कारागार का ही योग है। पर मैं ने सोचा था कि राज दरबार में होने के कारण इससे मुक्त हो जाऊँगा ।

लेकिन सच तो यह है कि राज दरबार में होने के कारण ही मुझे कारागार मिला। होनी को कोई टाल नहीं सकता। इसलिए आप मेरी चिन्ता न करें। इस समय आप अपनी चिन्ता करें। आप की मृत्यु की घड़ी निकट आ रही है!" रामशास्त्री ने चेतावनी देते हुए कहा।

रामशास्त्री से मिल कर महाराज विनय सेन ने सूर्यसेन को बुलवा कर कहा- "रामशास्त्री जैसे महान और ईमानदार पंडित के प्रति तुम्हारा यह व्यवहार मुझे उचित नहीं लगा। उन्होंने तुम्हारे विवाह की भविष्यवाणी मुझे बता दी थी, इसीलिए उसे रोकने के लिए तुम्हारे पास जंगल में पहुँच गया था। उन्होंने यह भी बताया है कि तुम अपनी पत्नी की सहायता से मेरी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाओगे और राजवंश का यश बढ़ाओगे। यही कारण है कि बहू के प्रति मेरा गहरा स्नेह है। उन्होंने तुम्हारा राजतिलक जल्दी ही कर देने के लिए इसलिए कहा कि मेरी मृत्यु मिकट है। क्या उनका दोष यही है कि उन्होंने सच कहा और हम सब का उपकार करना चाहा?"

पिता के इस प्रकार समझाने पर भी सूर्य सेन अपने हठ पर अड़ा रहा और बोला- "मैं ज्योतिष शास्त्र में विश्वास नहीं करता। यदि आप की मृत्यु के बारे में उनकी भविष्यवाणी सच्ची हुई तो उन्हें मुक्त कर दूँगा, अन्यथा आजीवन उन्हें कारागार में ही रहना पड़ेगा।"

इतना कह कर सूर्यसेन ने अपने पिता की

सुरक्षा के विशेष प्रबन्ध का आदेश दिया। महाराजा को कहीं भी बाहर जाने की मनाही हो गई। महल के चारों ओर पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी गई। राज्य के बड़े-बड़े वैद्य अचूक औषधियों के साथ महाराजा के पास ही बैठे रहते। स्वयं सूर्यसेन अपने पिता के साथ बैठ कर चौकन्ने हो देख रहे थे कि मृत्यु किस रूप में आती है।

इतनी सुरक्षा-व्यवस्था के बाद भी रामशास्त्री द्वारा बताये हुए समय पर महाराजा विनयसेन भय से एक बार चीख उठे और उनका सिर एक ओर लुढ़क गया। राज वैद्यों ने जाँच करके घोषणा की कि हृदयगति रुक जाने से इनका प्राणान्त हो गया।

बात यों हुई थी कि महाराज जिस पलंग पर लेटे हुए थे, उसके ऊपर एक दीप गुच्छ लटक रहा था। उस दीप गुच्छ पर किसी प्रकार एक छिपकली चढ़ गयी थी। रेंगते वक्त वह महाराज के शरीर पर ही गिर गई। मृत्यु से डरे हुए महाराजा भय से चीख पड़े। फलस्वरूप उनके दिल की धड़कन बन्द हो गई और उन का प्राणान्त हो गया।

हर तरह की सावधानी बरतने के बावजूद रामशास्त्री की भविष्यवाणी के अनुसार ठीक समय पर महाराजा की मौत आ गई और राजा की कोई भी ताक़त उसे रोक न सकी। यह देख कर राजा सूर्यसेन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

वह रामशास्त्री के ज्योतिष-ज्ञान से बहुत प्रभावित हुआ और उनसे क्षमा माँगते हुए बोला- "आप का ज्योतिष ज्ञान अपूर्व है। आप की प्रतिभा ऐसी है, मुझे मालूम न था। आज से आप मुक्त हैं। कृपया आप ज्योतिष ज्ञान से राज प्रबन्ध में हमें मदद कीजिए।" इतना कहते हुए राजा ने रामशास्त्री को कारागार से मुक्त करने का आदेश दिया।

इस पर रामशास्त्री मुस्कुराते हुए बोले- "महाराज! ज्योतिष शास्त्र के प्रति आप के मन में जो आदर-भाव पैदा हुआ है, उससे मुझे

बहुत खुशी हुई है। लेकिन ज्योतिष के पंडित के रूप में मैं आप के राज प्रबन्ध में कुछ सहायता कर पाऊँगा, यह मुझे सन्देह है। अतः इसकें लिए मुझे क्षमा कीजिए।" यों कह कर रामशास्त्री ने राजा से विदा ली।

बेताल ने कहानी सुना कर विक्रम से कहा- "राजन! मेरे मन में रामशास्त्री के बारे में अनेक सन्देह पैदा हो रहे हैं। मेरी दृष्टि में राज के निमंत्रण को अस्वीकार करना राम शास्त्री की भारी भूल थी।

"सूर्यसेन को पहले ज्योतिष शास्त्र में बिलकुल विश्वास नहीं था। परन्तु बाद में जब उसका विश्वास हो गया तो वह ज्योतिष शास्त्र का आदर करने लगा। जिस व्यक्ति को उसने कारागार में डाल दिया था उसी से राज प्रबन्ध में सहायता मांगी। ऐसी हालत में क्या रामशास्त्री का यह कहना झूठ नहीं है कि वह राज प्रशासन में सहायता नहीं कर सकेगा। इस शंका का समाधान यदि आप जान कर भी नहीं देंगे तो आप का सिर फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रम बोले- "रामशास्त्री ज्योतिष के महान पंडित होने के साथ-साथ बहुत सच्चे और ईमानदार व्यक्ति भी थे। उनका कहना सच और सही था कि वे शासन के कार्यों में राजा की सहायता नहीं कर पायेंगे।

रामशास्त्री ने महाराजा विनयसेन को पहले ही खबर कर दी थी कि राजकुमार का विवाह भील कन्या से होनेवाला है।

महाराजा की मृत्यु की भी रामशास्त्री ने भविष्य वाणी कर दी थी। वे यह भी जानते थे कि उन्हें कारागार की सजा का योग है। किन्तु पूर्व ज्ञान होने पर भी होनी नहीं टली, ऐसी हालत में ज्योतिष शास्त्र का उपयोग ही क्या है? रामशास्त्री इसी पेशोपेश में पड़ गये। इसी कारण उन्होंने राजा का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया।"

राजा विक्रम के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा।

चोरी बनाम ईमानदारी

नीलकंठ दीक्षित एक महान पंडित थे। उनके पांडित्य पर प्रसन्न होकर राजा ने उनके दोनों हाथों में सोने के कंगन पहना दिये।

एक दिन नीलकंठ दीक्षित राजदरबार से आकर सोने के कंगनों को मेज़ पर रख स्नान के लिए गये। लौट कर देखा तो मेज़ पर एक ही कंगन था। पूछ ताछ करने पर पता चला कि थोड़ी देर पहले उनके एक सम्बन्धी श्याम शास्त्री आये थे और तुरंत वापस भी चले गये। शास्त्री जी की चोरी की आदत सबको मालूम थी। नीलकंठ दीक्षित को विश्वास हो गया कि यह काम हो न हो श्याम शास्त्री का ही है।

दीक्षित जी तुरन्त श्याम शास्त्री के गाँव के लिए चल पड़े। उनके घर पहुँचते ही तपाक से बोले- "अरे श्यामू ! तुम दोनों ही कंगन क्यों उठा लाये ? राजा ने कितने प्रेम से ये कंगन मुझे भेंट में दिये थे ! कम से कम एक तो छोड़ जाते !"

श्याम शास्त्री थोड़ा खीझ कर बोले- "आप भी कैसे झूठे हैं ? दोनों कंगन मैं कब लाया ? मैं तो एक ही लाया हूँ। यह देखो।" यह कहते हुए उसने दीक्षित जी के सामने कंगन फेंक दिया।

"मैं तुम्हारी ईमानदारी जानता हूँ श्यामू ! तुमने सचमुच एक ही लिया होगा। दूसरा कंगन कोई और कमबख्त मार गया।" अपनी चालाकी पर खुश होते हुए दीक्षित अपने गाँव लौट गये।

परीक्षा

शिवनाथ मुकुन्द नगर के राजा प्रसेन वर्मा के दरबार में प्रधान मंत्री थे। वे अपनी सूझ बूझ, तेज़ बुद्धि, उचित सलाह और निडरता के लिए राज्य भर में प्रसिद्ध थे। राजा की शासन सम्बन्धी कठिन से कठिन समस्या को वे चुटकी में सुलझा देते। राजा का इसीलिए, इन पर बहुत भरोसा और अगाध प्रेम था।

दुर्भाग्यवश, एक दिन, अचानक शिवनाथ दुनिया से चल बसे। प्रसेन वर्मा के लिए यह बहुत बड़ा दुख था। कुछ दिनों के बाद जब उनका शोक कम हुआ तो राज-काज में सहायता और सलाह लेने के लिए किसी को उस पद पर नियुक्त करने का निर्णय किया।

राजा की सलाहकार समिति में तीन मंत्री और थे-विशाल, प्रशान्त और शंकर भट्ट। इन तीनों मंत्रियों में से किसी में भी शिवनाथ की प्रतिभा नहीं थी। फिर भी, कई अवसरों पर इन सबने भी राजा को कई महत्वपूर्ण अच्छे परामर्श दिये थे। इसलिए राजा इन्हीं में से किसी एक को अपना प्रधान मंत्री बनाने का इरादा रखते थे।

राजा ने सबसे पहले विशाल को बुलाकर कहा- "मैं आप को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त करना चाहता हूँ। इसी सिलसिले में मैंने आप को एक खास विषय पर सलाह लेने के लिए बुलाया है।"

राजा की बात से विशाल को विश्वास हो गया कि उसे ही प्रधान मंत्री बनाया जायेगा। उसने राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा- "हम अपनी बुद्धि भर आप को सर्वोत्तम सलाह देने की कोशिश करेंगे। बताइये, समस्या क्या है?"

"अभी-अभी गुप्तचरों ने यह सन्देश भेजा है कि हमारा पड़ोसी राजा सुकेत हम पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा है। सैनिक बल और

रामसुभग सिंह

"जी हाँ महाराज ! आप का विचार अधिक उपयुक्त है ।" विशाल ने बिना विरोध किये तुरन्त अपनी सहमति प्रकट की ।

राजा ने विशाल के बाद प्रशान्त को भी उसी प्रकार प्रधानमंत्री बनाने का अपना विचार बताते हुए कहा- "अभी-अभी राज खज़ान्ची ने यह बताया है कि खज़ाना खाली हो रहा है और शासन के लिए धन पर्याप्त नहीं रह गया। मैं इसीलिए आजकल बहुत चिन्तित हूँ । क्या आप खज़ाने की आय बढ़ाने का कोई उचित उपाय बता सकते है ?"

"इसका उपाय बहुत आसान है महाराज ! प्रजा पर कुछ नये कर लगा दीजिए और पुराने करों में वृद्धि कर दीजिए ।" प्रशान्त ने तुरन्त उत्तर दिया ।

साधन दोनों ही दृष्टियों से वह हमसे कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा है । क्या आप बता सकते हैं कि हमें उसका मुक़ाबला किस प्रकार करना चाहिए ?" राजा ने विशाल की आँखों में गहरी दृष्टि डालते हुए यह प्रश्न किया ।

"बलवान शत्रु से समझौता कर लेना ही अच्छी कूटनीति है । इससे धन और जन दोनों की रक्षा हो जायेगी ।" विशाल ने गंभीर होकर कहा ।

"यह तो हमारे आत्म-सम्मान के विरुद्ध होगा ।" राजा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा । "उल्टा हमें उस पर अचानक हमला करके उसे बन्दी बना लेना चाहिए । क्या यह अधिक व्यावहारिक कदम नहीं होगा ?"

"लेकिन" — राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, "प्रजा पर कर का बोझ बढ़ाने से उनमें असन्तोष होगा और राज्य पर से उनका विश्वास उठ जायेगा ।" राजा फिर गंभीर होकर बोले- "इससे तो अच्छा यह है कि हम सब यह पता करें कि राज्य व्यवस्था में कहाँ फिज़ूलखर्ची हो रही है और उसे रोकने के लिए तुरन्त सख़्त कदम उठायें ।"

प्रशान्त लज्जित हो बोले-"जी हाँ महाराज ! यह निश्चय ही बेहतर उपाय होगा ।"

प्रसेनवर्मा ने प्रशान्त को विदा कर शंकर भट्ट को बुलवा भेजा । उन्हें भी प्रधान मंत्री बनाने का अपना विचार व्यक्त करते हुए राजाने

एक समस्या रखी- "राज्य के दक्षिणी हिस्से में कई वर्षों से बरसात न होने के कारण अकाल पड़ गया है। रोज़ समाचार आ रहे हैं कि अन्न-जल के अभाव में लोग भूखे प्यासे मर रहे हैं। उस क्षेत्र में अधिक से अधिक कुएं खुदवा देने से समस्या हल हो सकती है। इस में आप की क्या सलाह है ?"

शंकर भट्ट थोड़ी देर चिन्तन में डूबे रहे। फिर बोले- "यदि राज्य में कहीं अकाल पड़ जाये तो सबसे पहले राज्य के अन्य हिस्सों से वहाँ तुरंत अनाज भेजना चाहिए ताकि भूख से होने वाली मौत अविलम्ब रुक सके।"

थोड़ी देर चुप रह कर वे फिर बोले- "जैसा आप कहते हैं कि राज्य के दक्षिणी भाग में अकाल पड़ गया है तो वहाँ कुएं खुदवाने पर धन खर्च करने के बदले निकटवर्ती बारहमासी नदी गायत्री के पानी को उन सूखे इलाकों में मोड़ दिया जाये जिससे वह क्षेत्र शस्य श्यामल हो जाये और अन्न-जल दोनों का संकट सदा-सदा के लिए दूर हो जाये।

इस पर प्रसेनवर्मा क्रोध प्रकट करते हुए बोले- "तो क्या मेरे विचारों की कोई क़ीमत नहीं है ?"

शंकर भट्ट राजा का क्रोध देखकर घबराये नहीं। वे शान्त और नम्र भाव से बोले- "आप की बातों के महत्व को कम करना मेरा इरादा नहीं है महाराज ! मेरे विचार से इस समस्या का यही प्रभावकारी उपाय है, इसीलिए मैंने इसे आपके सामने रखा। आगे आप की इच्छा।"

"क्या आप जानते हैं कि मेरे क्रोध को

भड़काने का क्या नतीज़ा हो सकता है ?'' राजा ने आँखें दिखाते हुए कहा ।

शंकर भट्ट शान्त और निर्भीक बने रहे और आदरपूर्वक बोले- ''जानता हूँ महाराज । मैं प्रधान मंत्री नहीं बनूँगा और न मैं अपने को उसके योग्य समझता हूँ। आप मुझे मंत्री पद से हटा भी सकते हैं.। लेकिन पद के लालच में आकर राज्य हित में जो उचित है उससे कैसे इनकार कर सकता हूँ ।''

इतना कह कर शंकर भट्ट राजा की अनुमति लेकर बाहर आ गये। दूसरे दिन दरबार में राजा प्रधान मंत्री की नियुक्ति की घोषणा करने वाले थे ।

सभी दरबारियों में यह बात फैल गई कि विचार-विमर्श करते समय राजा शंकर भट्ट से नाराज़ हो गये हैं, अतः अब उन्हें प्रधान मंत्री पद पर नहीं रखा जायेगा। हो सकता है, उन्हें दण्ड भी मिले। शंकर भट्ट भी इस बात को जानते थे ।

इधर विशाल और प्रशान्त मन में लड्डू फोड़ रहे थे। दोनों में से प्रत्येक को विश्वास था कि प्रधान मंत्री तो मैं ही बनूँगा। सिर्फ़ घोषणा की देर है ।

सभी दरबारी काना-फूसी करके अपनी अपनी राय प्रकट कर रहे थे। तभी राजा ने दरबार में प्रवेश कर आसन ग्रहण किया । दरबार में सन्नाटा छा गया। सभी लोग सांस रोक कर फ़ैसले का इन्तज़ार करने लगे। सब को एक-एक पल पहाड़-सा लगने लगा। तभी राजा आसन से उठे और बोले- ''हमें प्रधान मंत्री पद के लिए एक ऐसे आदमी की जरूरत थी जो निस्वार्थ भाव से मेरे क्रोध की बिना परवाह किये राज्यहित में उचित सलाह दे सके। स्वर्गीय प्रधान मंत्री शिवनाथ एक ऐसे ही व्यक्ति थे । सौभाग्य से आज हमारे बीच एक और शिवनाथ उपस्थित हैं । और वे हैं ...''

राजा कहते-कहते रुक गये। उनकी नज़र दरबारियों की तरफ़ उठी और किसी को खोजती हुई दूर अलग बैठे एक उदास चेहरे पर रुक गई। राजा ने वाक्य पूरा किया- ''प्रधान मंत्री शंकर भट्ट ।''

वाराणसी पर गीदड़ की चढ़ाई

एक बार बोधिसत्व ने काशी के एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। बोधिसत्व में बचपन से ही ज्ञान के लिए अद्भुत लगन थी। अतः छोटी उम्र में ही इन्होंने समस्त शास्त्रों का अध्ययन समाप्त कर लिया। नगर के बड़े-बड़े पंडित इनके ज्ञान का लोहा मानने लगे। इनकी असाधारण योग्यता से प्रभावित होकर काशी-नरेश ने इन्हें प्रधान पुरोहित बना दिया।

बोधिसत्व ने शास्त्रों का अध्ययन कर एक ऐसे मंत्र का पता लगाया जिसे कोई भी सुनता तो वह मंत्र कहनेवाले के प्रभाव या अधिकार में आ जाता और बिना विरोध किये उसकी आज्ञा का पालन करता।

बोधिसत्व इस मंत्र का किसी पर प्रयोग करना तो नहीं चाहते थे पर इतना जरूर चाहते थे कि इस मंत्र का अभ्यास बना रहे ताकि जरूरत पर जन-कल्याण के लिए इसका उपयोग हो सके।

इस विचार से, एकान्त में इस मंत्र का अभ्यास करने के लिए एक दिन बोधिसत्व निकट के जंगल में गये। वहाँ एक ऊँची चट्टान पर बैठ गये। उन्होंने इधर-उधर ध्यान से देखा, कोई नहीं था। उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से बोल कर मंत्र का कई बार अभ्यास किया। सूर्यास्त होने पर वे वापस आने के लिए उठ खड़े हुए। तभी चट्टान के पीछे से एक गीदड़ आकर बोला-''पंडित जी महाराज ! मैंने आप का मंत्र कण्ठस्थ कर लिया है। तुम्हें सौ-सौ प्रणाम !'' इतना कह कर वह भाग गया।

बोधिसत्व ने सोचा-गीदड़ जैसे अयोग्य के लिए यह मंत्र सीखना शुभ नहीं है, इसलिए उसने उसका पीछा किया। गीदड़ पास की झाड़ियों में छिप गया। अन्धेरा बढ़ गया था इसलिए बोधिसत्व उसे पकड़ न सके।

गीदड़ पिछले जन्म में ब्राह्मण था। चालाकी

और मक्कारी के कारण उसे गीदड़ का नीच जन्म मिला था। मनुष्य जन्म की स्मरण शक्ति बनी थी, इसी कारण वह मंत्र तुरन्त सीख गया।

गीदड़ को रास्ते में एक दूसरा मोटा तगड़ा गीदड़ मिला। इसने तुरंत मंत्र का उच्चारण किया। तगड़े गीदड़ ने उसे झुक कर प्रणाम किया और रास्ता दे दिया। गीदड़ बड़ा प्रसन्न हुआ। इसने कुछ ही दिनों में सैकड़ों गीदड़ों और सियारों पर प्रभाव जमा लिया। इसके बाद जंगली सुअरों, बाघों, शेरों और हाथिथों को भी प्रभावित किया और एक दिन समारोह के साथ वह जंगल का राजा घोषित कर दिया गया

अब क्या था। गीदड़ चैन से जंगल पर राज्य करने लगा। वह मन ही मन अपने भाग्य पर इठलाता। सोचता, एक मंत्र की बदौलत वह आज कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। एक मामूली गीदड़ से जंगल के राजा का भी राजा हो गया है। शेर तक उसकी गुलामी करते हैं। हाथी, गैंडे सभी देखते ही सलाम करते हैं।

वह मंत्र से अधिक अपनी बुद्धि और चतुराई की तारीफ़ करता। यदि अपनी चतुराई से मंत्र नहीं सीखता तो मंत्र का क्या कोई लाभ होता!

देखते-देखते उसके दिन बदल गये। पहले जहाँ उसे बड़े जानवरों के जूठन पर गुजारा करना पड़ता, वहाँ अब रोज़ नये-नये ताज़े चढ़ावे आने लगे। शाकाहारी पशु भेंट में तरह-तरह के फल लाते, मांसाहारी पशु ताज़ा मांस। राजा के सन्तुष्ट होने पर ही शेर-चीते अपना भोजन शुरू करते।

शरीर और अहंकार दोनों बैलून की तरह फूलने लगे। इसका शरीर इतना मोटा हो गया कि भेड़िया और इसमें भेद करना मुश्किल हो गया। वह शान से जंगल का दौरा करने लगा और बड़े-बड़े जानवरों को डाँटने-फटकारने और हुक्म सुनाने लगा।

जंगल के कुछ जानवर तो यह समझते कि यह साधारण गीदड़ नहीं है, बल्कि किसी दैवी शक्ति का अवतार है। लेकिन कुछ जानवर पीछे में इसकी शिकायत भी करते। फिर भी, मंत्र का कुछ ऐसा असर था कि गीदड़ राजा के

सामने आते ही उनकी बोलती बन्द हो जाती। सब को आश्चर्य होता कि आखिर यह गीदड़ से जंगल का राजा कैसे बन बैठा। मंत्र का राज़ किसी को मालूम न था।

कुछ स्वार्थी गीदड़ों ने अपने लाभ के लिए राजा को सलाह दी- "रानी के बिना राज्य सूना-सा लगता है महाराज! और जब तक राज्य की व्यवस्था देखने के लिए मंत्री और सेनापति नहीं रहेंगे, तब तक दुश्मनों का खतरा बराबर बना रहेगा।" यह बात राजा को भा गयी।

गीदड़-राजा ने एक मादा गीदड़ से विवाह कर उसे रानी घोषित किया। कुछ बाघों और शेरों को चुन कर उन्हें मंत्री और सेनापति बनाया। उसे यह जान कर बहुत गर्व होता कि सभी जानवर बिना चूं-चपड़ उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

दो हाथियों को पास-पास खड़ा किया जाता। उन दोनों की पीठ पर एक शेर खड़ा होता। शेर की पीठ पर गीदड़-राजा विराजमान होता। खुशामदी पशु कहते- "इतना बड़ा राजा आज तक नहीं हुआ।" उसका गर्व बढ़ता गया।

एक दिन उसके मन में विचार आया- "क्या हम सिर्फ़ जानवरों का राजा बन कर संतोष कर लें? क्यों न वाराणसी को जीतें?" उसने शेरों और अन्य मजबूत जानवरों की सेना बनायी और वाराणसी पर चढ़ाई कर दी। इस डरावनी सेना को जिन्होंने देखा, उन सबने नगर भर में यह खबर फैला दी। नगरवासी डर से थर-थर काँपने लगे।
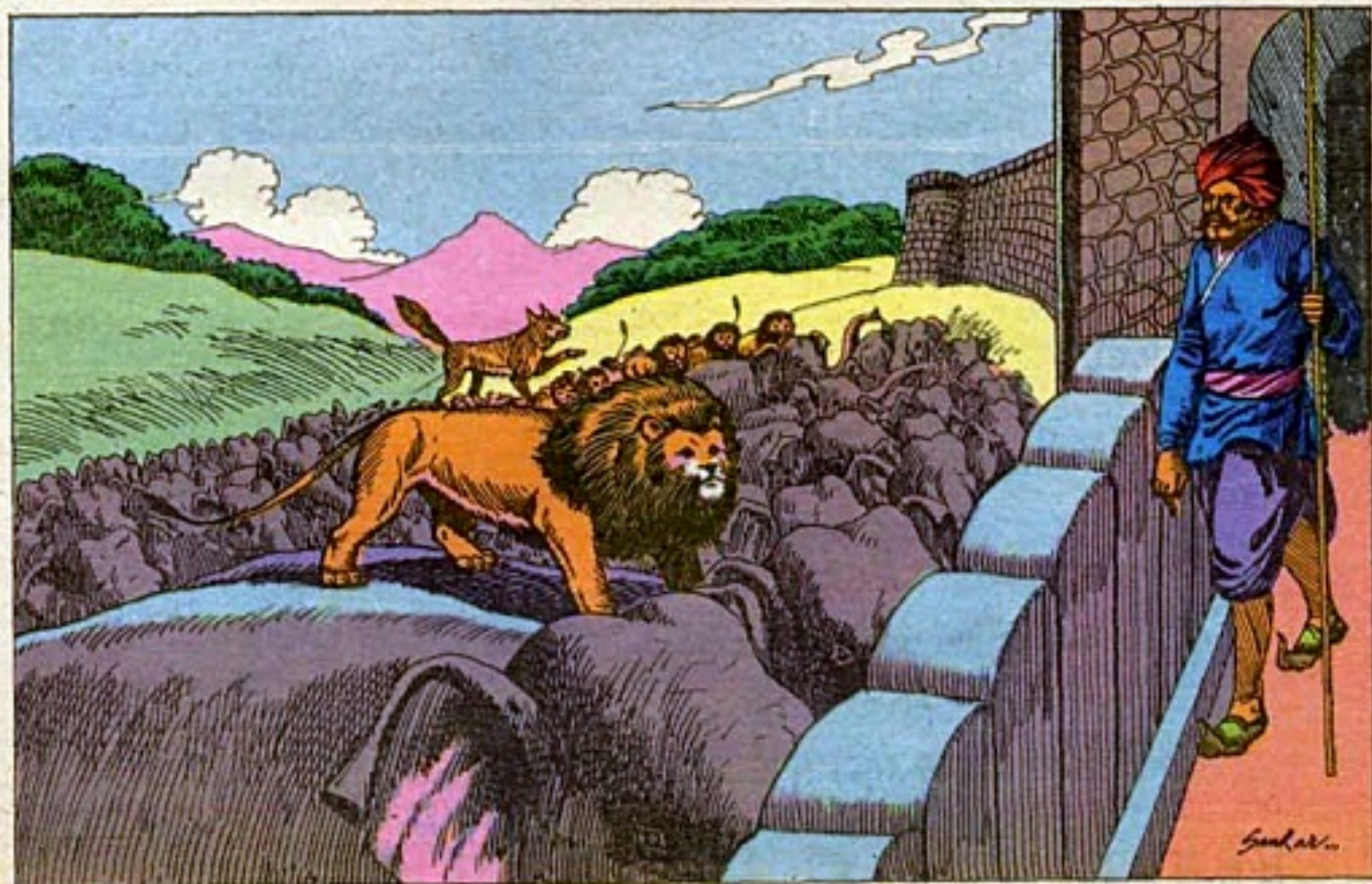
गीदड़-राजा नगर-द्वार पर रुका और भय-कंपित द्वार-रक्षकों से बोला- "अपने राजा से कहो कि आत्म-समर्पण कर दे, नहीं तो मेरी सेना नगर पर धावा बोल देगी।"

यह समाचार पाकर राजा घबरा गये। बोधिसत्व ने उन्हें धीरज बंधाते हुए कहा- "इससे निबटने की जिम्मेवारी मुझ पर छोड़ दीजिए।"

तब बोधिसत्व ने नगर की दीवार पर खड़े होकर गीदड़-राजा से पूछा- "तुम नगर को कैसे जीतना चाहते हो ?"

गीदड़-राजा अट्टहास करके बोला- "यह तो बहुत आसान है। यदि हमारे शेर गरजना शुरू करें तो सारे नगरवासी जान लेकर भाग जायेंगे।"

बोधिसत्व को गीदड़ की बात सही लगी। उन्होंने दीवार के नीचे खड़े अधिकारियों से कहा- "जाकर नगरवासियों से कह दो कि वे अपने-अपने कान रूई से बन्द कर लें।" जैसे ही यह काम पूरा हुआ, बोधिसत्व ने गीदड़ से कहा- "अब तुम जैसे भी नगर पर अधिकार करना चाहते हो, करो।"

दो हाथियों पर खड़े सिंह पर विराजमान गीदड़-राजा ने सभी सिहों को एक साथ गरजने का आदेश दिया। घोर गर्जन से आकाश फटने लगा लेकिन नगरवासियों को कुछ भी सुनाई नहीं दिया। हाँ, इससे हाथी अवश्य भड़क उठे और उन पर खड़ा सिंह धम्म से नीचे गिरा। गीदड़-राजा हाथियों की भाग-दौड़ में उनके पाँव के नीचे आकर बैकुण्ठ सिधार गये। जानवरों में भागदौड़ मच गई। इसमें कुछ कुचल कर मर गये, जो बचे जंगल में भाग गये।

ढिंढोरे पर घोषणा सुनकर नगरवासियों ने अपने-अपने कानों से रूई निकाल ली। जब उन्हें मालूम हुआ कि इतनी बड़ी बला बड़ी आसानी से टल गई है तो सारे नगरवासियों ने खूब आनन्द मनाया। राजा और प्रजा सब ने बोधिसत्व के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

बादशाह अकबर — २

आगरा के समीप सीकरी नामक एक सुन्दर प्रदेश की पहाडी पर शेख सलीम चिस्ती नाम के फ़कीर रहते थे । उनके प्रति बादशाह अकबर के दिल में अपार श्रद्धा-भक्ति थी ।

ई-सन् १५६९ में अकबर की एक राजपूत रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया । अकबर ने सोचा, फकीर शेख सलीम के आशीर्वाद के कारण ही उन्हें यह पुत्र हुआ है । इसी विश्वास से अकबर ने उस शिशु का नाम सलीम रखा । अकबर के बाद वही युवराज मुगल साम्रांज्य की गद्दी पर बैठा ।
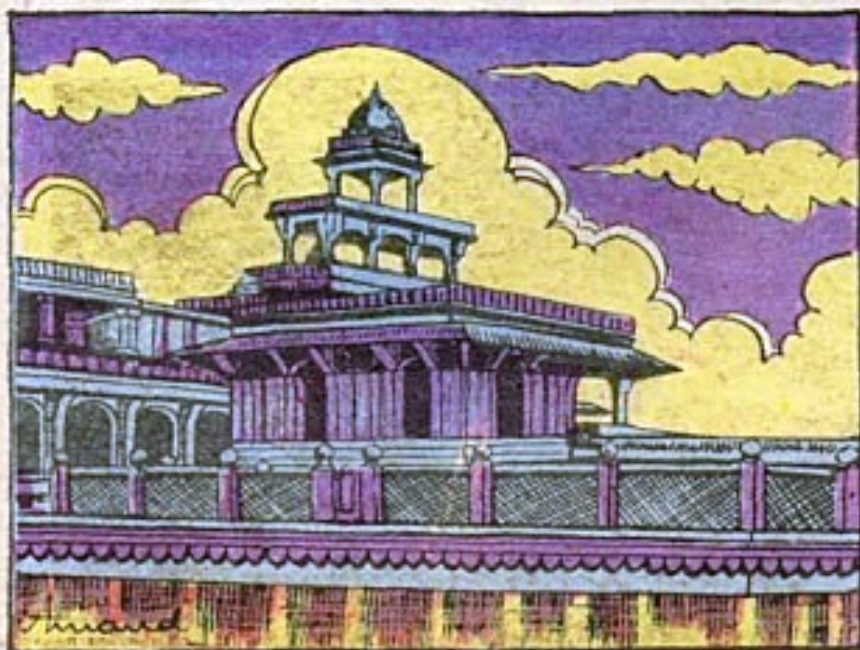
फकीर सलीम के प्रति अपना आदर प्रकट करने के विचार से अकबर ने सिकरी में एक क़िला बनवाया । वहाँ पर एक अद्भुत राज महल बनवाकर उसीको अपनी राजधानी बनाया । उसी दुर्ग से अकबर ने गुजरात पर चढ़ाई की और उसमें विजय प्राप्त की । उसी समय से वह स्थान फतहपुर (विजय नगर) सीकरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

ई सन् १५९३ में अकबर ने अहमद नगर पर हमला किया। तब तक अहमदनगर का राजा मर चुका था। उस राजा की मृत्यु के बाद उसकी बहन चांदबीबी जो बीजापुर की रानी थी, अहमद नगर पर शासन करने लगी। चांदबीबी ने मुगल सेनाओं का सामना किया।

प्रारंभ में चांदबीबी ने साहसपूर्वक मुगल सेना के साथ युद्ध किया, पर बाद में उसने समझ लिया कि अपार मुगल सेना के हमले को रोकना असंभव है। इस विचार से उसने मुगल सेनापतियों को समझौते का यह संदेशा भेजा कि अगर मुगल सेना शांति के साथ अहमद नगर को छोड़ कर वापस लौटे तो वह बीरार सूबा उन्हें सौंपने केलिए तैयार है।

मुगल सेना इस समसौते के अनुसार अहमदनगर छोड़ कर चली गई। पर चांदबीबी का यह निर्णय अहमद नगर के कुछ प्रमुख व्यक्तियों को अच्छा न लगा। इसलिए उन लोगों ने चांदबीबी की हत्या कर डाली। इसके बाद अहमद नगर मुगलों के हाथ में चला गया।

अकबर ने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, बल्कि वे एक कुशल शासक के रूप में भी विख्यात हुए। उनके मंत्री अबुल फज़ल ने आइने अकबरी नामक एक इतिहास ग्रंथ लिखा है।

मंत्री बीरबल, प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन, महाकवि फ़ैज, जमीन की पहली बार माप कराने वाले राजा टोडर मल अकबर के दरबार में प्रमुख नवरत्न थे।

अकबर ने अनुभव किया कि विभिन्न प्रकार के धर्म मानव-मानव के बीच भेदभाव पैदा करते हैं, उन्हें दूर करने के ख्याल से उन्होंने सभी धर्मों को मिला कर दीनए इलाही नामक एक नया धर्म चलाया। पर यह धर्म अधिक समय तक नहीं चल पाया।

एक विशाल साम्राज्य का बादशाह होकर भी अकबर को अपने अंतिम समय में अनेक दुखद परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। पश्चिमोत्तर सीमा पर बीरबल मारे गये, युवराजा सलीम की प्रेरणा से अकबर के प्रिय पात्र अबुल फजल की हत्या कर दी गई। इन दोनों की मृत्यु से अकबर के दिल पर गहरा आघात पहुँचा।

उन्हीं दिनों इंग्लैण्ड की रानी प्रथम एलिजाबेथ के यहाँ से जान न्यूबेरी के नेतृत्व में तीन अधिकारी अकबर से मिलने आये। ये ही तीनों व्यक्ति भारत में सबसे पहले क़दम रखने वाले अंगेज़ अधिकारी थे।

अकबर केलिए अत्यंत प्राणप्रिय फतहपुर सीकरी पानी के अभाव में आधिक समय तक राजधानी बनने का गौरव प्राप्त न कर सका। उस विशाल राजमहल को विवशता की स्थिति में अकबर को छोड़ना पड़ा। युवराज सलीम के हाथों अधिकदुख भोगने के पहले ही ई-सन् १६०५ में अकबर इस दुनिया से चल बसे।

जाको राखे साइयाँ

अब्दुल हमीद हसन बगदाद के सुलतान हमीद का एकलौता बेटा था । वह खूबसूरत और बहादुर था । जब वह जवान हुआ तो सुलतान ने उसे युवराज घोषित करना चाहा ।

जब हसन को यह बात मालूम हुई तो उसने सुलतान से कहा- "अब्बाजान ! सल्तनत का वारिस बनने से पहले मैं मुल्क के हर हिस्से को अच्छी तरह देख-परख लेना चाहता हूँ ।"

सुलतान ने हसन की बात मंजूर कर ली; लेकिन समझाया- "बेटे ! इस दुनिया में अच्छे-बुरे दोनों ही तरह के लोग हैं । सावधानी से जाना । यों तो सब का एक ही मददगार है-खुदा, फिर भी कुछ हथियार बन्द सिपाहियों के साथ वजीर भी तुम्हारे साथ रहेंगे ।"

सुलतान से विदा लेकर हसन यात्रा पर चल पड़ा । कुछ दिनों तक वह शहरों और गाँवों में घूमता रहा, उनके दुख-सुख में शामिल होकर उनके विचारों को समझता-बूझता रहा और फिर बगदाद के लिए रवाना हो गया । रास्ते में उसे एक सुन्दर पहाड़ी प्रदेश मिला । वज़ीर ने पहाड़ियों की खूबसूरती की तारीफ़ करते हुए कहा- "यहाँ क्यों न हुजूर एक-दो दिन आराम फरमा लें ?" हसन ने बात मान ली ।

हसन अपने खेमे में आराम करने जा ही रहा था कि वज़ीर ने कहा- "हुजूर ! यदि आप सफ़र से थक कर चूर नहीं हो गये हों तो इस वन प्रदेश का एक अद्भुत हिरन दिखा दूँ ।"

"हिरन तो मैं ने एक-से-एक देखे हैं । इसमें खास बात क्या है ?" हसन ने ध्यान नहीं दिया ।

वज़ीर ने आश्चर्य से आँखें फाड़ते हुए कहा- "ऐसा हिरन धरती पर शायद ही और हो । लगता है, इसके सारे शरीर पर सोने का मुलम्मा चढ़ाया हुआ है । आँखें मानों दो सितारे हों ? उसके खुर तो सान धरे हीरे के समान चमचमाते

हैं। देखेंगे हुजूर तो देखते ही रह जायेंगे।"

हसन को हिरनों का बहुत शौक था। उसने एक-से-एक विचित्र हिरन देखे थे और कई अज़ीबोगरीब हिरन अपने बाग में पकड़ कर रखे भी थे।

"क्या सचमुच!" हसन को जैसे विश्वास नहीं हुआ। खेमे से वापस मुड़ते हुए कहा- "देखें, तुम्हारी बातों में कितनी सच्चाई है!"

दोनों घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। चारों ओर दूर-दूर तक छोटी-छोटी पहाड़ियों का एक बहुत बड़ा सिलसिला बिखरा पड़ा था। जैसे ही उन दोनों ने एक पहाड़ी पार की कि वज़ीर ने उसकी घाटी में फैले एक हरे मखमली मैदान की ओर इशारा किया- "वह देखिए हुजूर!"

पहाड़ी के पार मैदान में उतरते हुए एक झरने के पास सचमुच सोने का हिरन खड़ा था।

"सपना है या सच!" हसन थोड़ी देर केलिए अपनी आँखों पर भी विश्वास नहीं कर सका। घोड़े को रोक कर बहुत देर तक उस स्वर्गीय सौन्दर्य को निहारता रहा। फिर बोला- "इसे खूंखार जानवरों के बीच नहीं, मेरे शाही बाग में होना चाहिए।" इतना कह कर उसने घोड़े को एड़ लगाई और हिरन को पकड़ने के लिए चल पड़ा।

हसन जैसे ही उसके निकट पहुँचा, हिरन छलांगें भरते हुए पहाड़ी के पार चला गया। हसन ने उसकी तलाश में कई पहाड़ियाँ छान मारीं पर कोई फल न निकला। वह काफी थक चुका था। उसने वज़ीर को इधर उधर पुकारा पर उसका भी कोई पता न चला। अन्त में निराश हो खेमे की ओर लौट पड़ा।

जब वह वापस जा रहा था तो रास्ते में उसे एक क़िले का खंडहर मिला। उसकी टूटी दीवार के साथ लग कर एक सुन्दर युवती रो रही थी। इस सुनसान जंगल में अकेली युवती को देख उसे आश्चर्य हुआ। उसने युवती से पूछा- "इस खतरनाक पहाड़ी इलाके में तुम अकेली कैसी आई तथा तुम्हारे रोने का कारण क्या है?" युवती ने हसन को अपनी कहानी इस प्रकार सुनाई- "मैं ईरान की शाहजादी हूँ। हफ़्ता पहले की बात है। मैं अपनी नौकरानियों के साथ नदी में नहाने गयी थी। वहाँ से लौटते

समय रास्ते में अचानक तूफान आया और आकाश बादलों से घिर गया। तभी बादलों से निकल कर एक दैत्य आया और मुझे लेकर ऊपर उड़ गया। बहुत देर तक बादलों में सफ़र करने के बाद दैत्य की पीठ पर बिजली गिरने से उसकी मौत हो गई और मैं यहाँ आ गिरी।"

"कितनी अजीबोगरीब है यह कहानी! सोने का हिरन, जंगल में खंडहर, खंडहर में शाहजादी और यह कहानी! लगता है यह जादू का देश है। खैर! अभी तो हमें इस शाहजादी की मदद करनी चाहिए।" यह सोच कर हसन ने राजकुमारी से कहा- "चलो! घोड़े की पीठ पर मेरे पीछे बैठ जाओ। अभी हम पास में ही लगे अपने खेमे में जायेंगे। फिर तुम्हें अपने मुल्क तक छोड़ आयेंगे।"

राजकुमारी हसन को धन्यवाद देती हुई घोड़े पर बैठ गई।

सूर्यास्त हो चुका था। पहाड़ियों पर स्याह चादर-सा अन्धेरा फैल रहा था। हसन ने घोड़े की चाल तेज कर दी।

अभी मुश्किल से वह थोड़ी ही दूर गया होगा कि पीछे से एक डरावनी हँसी सुनाई पड़ी। पीछे मुड़ कर देखते ही वह भय से काँप गया। वहाँ राजकुमारी के स्थान पर एक भूतनी बैठी थी। हसन बेसुध हो घोड़े की पीठ पर ही लुढ़क गया। कुरूप चेहरेवाली उस भूतनी ने उसे घोड़े पर ठीक से बिठाते हुए पूछा- "एक बहादुर

शाहजादा होकर इस प्रकार डर से काँप क्यों रहे हो?"

"तुम्हारे पास तो बहुत बड़ी फौज है। इस मुसीबत से अपने को बचाने के लिए उसे हुक्म क्यों नहीं देते?" भूतनी ने पुनः प्रश्न किया।

"वह इस समय बेकार है।" हसन ने इतना कहते हुए अपने आप को थोड़ा संभाला।

"क्या तुम्हारी बेशुमार दौलत भी तुम्हें बचा नहीं सकती?"

"काश! बचा पाती।"

"तुम्हारी बहादुरी, इज्जत, शोहरत - क्या ये सब भी नहीं?"

नहीं, बदक़िस्मती से ये सब भी नहीं।"

तभी भूतनी फिर हँसी और बोली- "तुम

ठीक कहते हो। धरती की कोई चीज़ तुम्हें अब बचा नहीं सकती। जब तुम्हारी मदद के लिए आया हुआ वज़ीर ही तुम्हारी मौत बुला सकता है तो तुम्हारी मदद और कौन कर सकता है ?"

हसन चौंकता हुआ बोला- "यह तुम क्या कह रही हो ? वज़ीर हमारा खास आदमी है। वह ऐसा कभी नहीं कर सकता ।"

"बहुत भोले हो तुम ।" भूतनी ने उसी डरावनी हँसी में फिर कहा- "हुकूमत का लालच इनसान को हैवान बना देता है। उसी ने तुम्हें मारने के लिए मुझे बहाल किया। मैं ही सोने का हिरन बन कर तुम्हें पहाड़ियों में भटकाती रही। मैं ही भूतहे खंडहर में शाहजादी बनकर रो रही थी ।"

हसन इस बात पर आश्चर्य कर रहा था कि इनसान को समझना कितना कठिन काम है, तभी भूतनी ने फिर कहा- "यह तुमने ठीक ही कहा कि तुम्हें इस समय तुम्हारी दौलत, सल्तनत, फौज कुछ भी बचा नहीं सकती। लेकिन क्या दुनिया में ऐसी कोई ताकत नहीं जो तुम्हें इस खतरे से बचा सके ?"

हसन को चलते समय सुलतान की कही बातें याद हो आयीं। "हाँ-केवल एक ताकत है जो अभी भी बचा सकती है-वह खुदा है ।"

इतना कहते ही भूतनी घोड़े से गिर पड़ी और जल कर भस्म हो गयी ।

हसन को इस बात से बहुत आश्चर्य हुआ कि कभी कभी आदमी के नक़ाब में कैसे शैतान छिपे रहते हैं और भूतों के दिल में कभी फरिश्ते का रहम भी होता है। भूतनी ने हमें सवालों के द्वारा खुदा की याद दिला दी और खुद मर कर हमारी जान बख़्श दी ।

हसन अब बिलकुल ठीकठाक महसूस कर रहा था। रात पूरी तरह घाटियों पर उतर चुकी थी और पगडंडियाँ अन्धेरे में खो गई थीं लेकिन पहाड़ी की ओट से झाँकते हुए चाँद ने कहा- "घबराओ नहीं, रास्ता मैं बताऊँगा ।" हसन को अब अपना खेमा दिखाई देने लगा था।

"अब हमें यह जिन्दा नहीं छोड़ेगा ।" हसन को खेमे की ओर वापस आते देख वजीर ने सोचा और खेमे के पिछवाड़े से भाग गया ।

सच्चे साधु का कर्त्तव्य

एक साधु थे। उनका नाम स्वामी नित्यान्द था। वे सदा एक गाँव से दूसरे गाँव में घूमते रहते। एक बार वे घूमते-घामते कोमल पुर पहुँचे।

दोपहर का समय था। प्यास से उनका कंठ सूख रहा था। उन्होंने एक गृहस्थ का दरवाज़ा खटखटाया। एक महिला बाहर आईं। साधु ने पीने के लिए थोड़ा पानी मांगा। महिला ने एक लोटा जल लाकर दिया। साधु सारा जल पी गये, फिर भी प्यास नहीं बुझी। उन्होंने एक लोटा जल और मांगा।

पानी पीकर स्वामी नित्यानन्द ने महिला को आशीर्वाद दिया और एक तालाब के पास पीपल की छाया में बैठ गये।

तालाब में पानी के स्थान पर दरारें थीं। पीपल के सूखे पत्ते पट-पट की आवाज कर रहे थे।

लेकिन उन्होंने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। प्यास तो उनकी बुझ चुकी थी, किन्तु भूख के मारे दम निकला जा रहा था। सोच रहे थे बल्कि आशा कर रहे थे कि कोई ग्रामीण आदर से ले जाकर भोजन करायेगा।

स्वामी नित्यानन्द को हरेक गाँव में बड़ा आदर-सत्कार मिला था। इसलिए सोच रहे थे यहाँ भी वैसा ही आदर-सत्कार मिलेगा। लेकिन जब शाम तक भी किसी ने खाने के लिए नहीं पूछा तो उन्होंने अपने झोले में पड़े फल से भूख मिटाई। रात वहीं बिता कर सवेरे कांचनपुर के लिए चल पड़े।

कोमलपुर के ग्रामीणों के इस व्यवहार से स्वामी नित्यानन्द को बहुत कष्ट पहुँचा। सोचने लगे-कैसा युग आ गया। साधु-सन्तों का कोई सम्मान नहीं रहा। सब के सब स्वार्थी और नास्तिक हो गये। पाप बढ़ गया है। तभी गाँव का तालाब सूखा पड़ा है।

इस गाँव में पाँव रखते ही पहले लोग घेर

प्रमीला यादव

कष्ट झेलना पड़ेगा ।"

स्वामी चिदानन्द ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और कोमलपुर की ओर रवाना हो गये । वहाँ करीब एक सप्ताह बिता कर पुनः कांचनपुर लौट आये ।

एक दिन संयोगवश एक तालाब पर दोनों साधुओं की पुनः भेंट हो गई । दोनों प्रातः काल स्नान करने आये थे । बातचीत के सिलसिले में स्वामी नित्यानंद बोले- "उस दिन आपने मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया । कोमलपुर में आप का अनुभव कैसा रहा ? काफी परेशानी उठानी पड़ी होगी । है न ?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं । बल्कि उन लोगों ने तो आशा से अधिक सत्कार किया । मैं उनका सेवा-भाव कभी नहीं भूल सकता ।" चिदानन्द ने कहा ।

"फिर मैं ने कौन-सा पाप किया है जिसके कारण मुझे उस गाँव में भूखा रहना पड़ा ?" नित्यानन्द ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ।

"कोमलपुर जाने के लिए एक तालाब की मेंड़ पर से गुजरना पड़ता है । शायद आप भी उसी रास्ते से गये होंगे । क्या आपने यह नहीं देखा कि तालाब सूख गया है और उसमें दरारें पड़ गई हैं ?" चिदानन्द ने पूछा ।

"क्यों नहीं ? मैं उसी तालाब के किनारे तो पीपल की छाया में दिन भर बैठा रहा । किन्तु

लेते थे । सब अपने-अपने घर चलने के लिए ज़िद करते । लेकिन अब तो रात भर तालाब पर भूखा-प्यासा पड़ा रहा और एक व्यक्ति भी पूछने नहीं आया ।

लेकिन कोई बात नहीं । साधु को इसका बुरा नहीं मानना चाहिए । हमारे मन में किसी के प्रति विकार पैदा नहीं होना चाहिए । ईश्वर इनके मन में श्रद्धा और विश्वास पैदा करें !

रास्ते में स्वामी चिदानन्द से भेंट हो गयी । बातचीत से मालूम हुआ कि स्वामी चिदानन्द कोमलपुर जा रहे हैं । इस पर स्वामी नित्यानन्द अपना अनुभव सुनाते हुए बोले- "उस गाँव के लोगों के मन में साधुओं के लिए आदर-सत्कार का भाव नहीं है । आप को नाहक़ वहाँ

सूखे तालाब की दरारों और गाँव वालों के स्वभाव में सेवा-सत्कार की कमी के बीच क्या सम्बन्ध है ?" नित्यानन्द ने आश्चर्य से पूछा।

"इन दोनों बातों में गहरा सम्बन्ध है।" चिदानन्द ने कहा। "सूखे तालाब को देख कर आप को यह समझ लेना चाहिए था कि वहाँ के लोग जल के अभाव से परेशान होंगे। किन्तु, इसके विपरीत, आपने गाँव में जाते ही पानी माँगा।"

"प्यास से मेरी तो जान निकल रही थी। आखिर मैं क्या करता ? साधुसन्तों की सेवा करना तो उनका धर्म बनता है।" स्वामी नित्यानन्द ने कहा।

"यह बात सही है। किन्तु गाँव में कई महीनों से जल का अभाव है। पीने के लिए जल वे लोग कोस भर से लाते हैं। साधु-सन्तों के प्रति गृहस्थ लोगों के हृदय में सेवा-भक्ति इसलिए रहती है क्यों कि ये उनके कष्टों को दूर करने के लिए कोई न कोई उपाय बतायेंगे, यह उन्हें आशा रहती है। हम लोगों का उन पर कोई अधिकार तो है नहीं।" चिदानन्द ने समझाते हुए कहा।

"आप का कहना सच है, किन्तु आपने वहाँ के निवासियों का सेवा-सत्कार कैसे प्राप्त किया ?" नित्यानन्द ने उत्सुकता प्रकट की।

"मैं अपने बड़े कमण्डलू में भर कर जल ले गया था। और जाते ही मैंने वहाँ के किसी व्यक्ति से जल नहीं मांगा, बल्कि स्वयं प्यासे रह कर उस गाँव के कई प्यासे लोगों को जल पिलाया। इसके अतिरिक्त समीप की पहाड़ियों में घूम-घूम कर चट्टानों से दबे एक झरने का पता लगाया और यह खुश खबरी गाँववालों को बतायी। गाँववाले अब उस झरने के जल को मोड़ कर तालाब भर रहे हैं।" चिदानन्द ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया।

इस पर स्वामी नित्यानन्द ने सिर झुका कर चिदानन्द को प्रणाम किया और कहा—

"यों तो मैं बहुत दिनों से साधु का जीवन बिता रहा हूँ किन्तु आज ही मालूम हुआ कि सच्चे साधु का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए।"
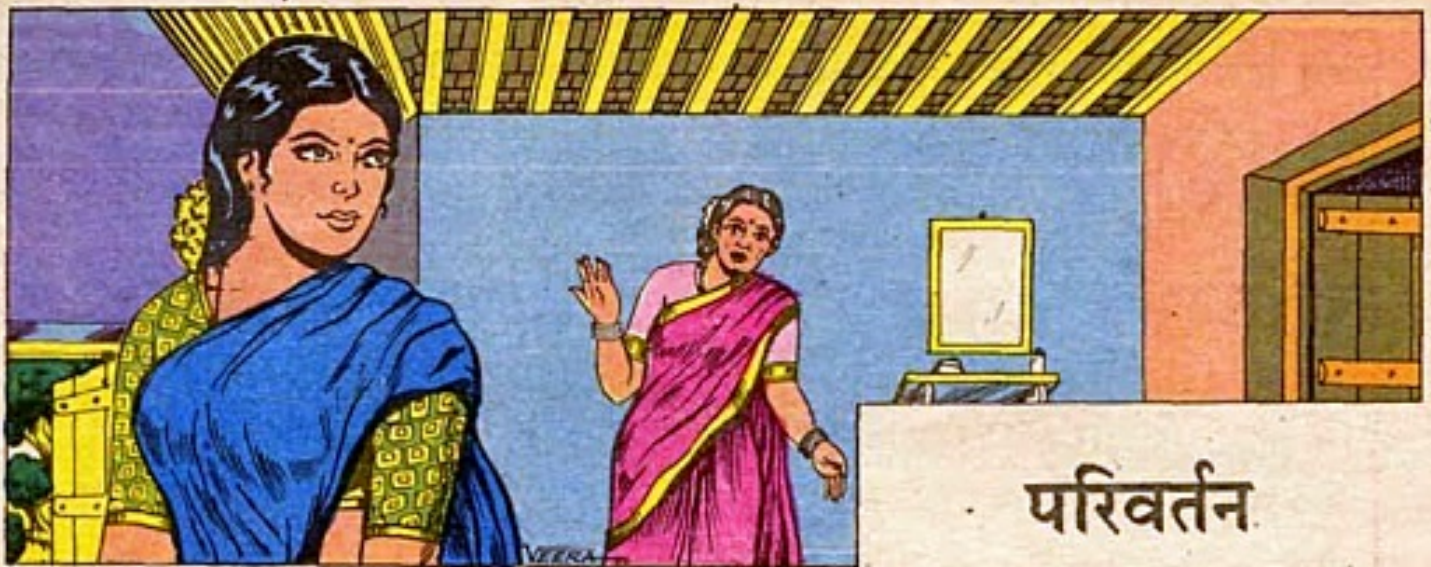
परिवर्तन

लायलपुर में एक सरल और सुखी दम्पति थी — अनसूया और रमापति। इन के दो पुत्र थे-इन्द्रनाथ और केदारनाथ।

इन्द्रनाथ गाँव की पाठशाला में अध्यापक हो गये। केदारनाथ शहर की एक नाटक कम्पनी में गायक और अभिनेता बनकर काफी रक़म कमाने लगे।

इन्द्रनाथ और केदारनाथ दोनों के विवाह हो चुके थे। इन्द्रनाथ की पत्नी का नाम सुमति था, केदारनाथ की पत्नी लक्ष्मी थी।

इन दोनों बेटों के विवाह के बाद अनसूया और रमापति ने सन्तोष की सांस ली। सोचा-बेटे कमा रहे हैं, विवाह हो गया है, अब हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया है। वे आधा महीना इन्द्रनाथ के घर तथा शेष आधा महीना केदारनाथ के घर आराम से बिताने लगे।

अनसूया और रमापति इन्द्रनाथ के घर ठहरे हुए थे। तभी ख़बर मिली कि केदारनाथ को बुखार हो गया है। यह ख़बर पाकर अनसूया बड़ी बहू सुमति से बोली- "बेटी! आये दिन केदार की तबीयत खराब रहा करती है। वह साधारण बुखार में भी घबरा जाता है जब कि इन्द्रनाथ छोटी-मोटी बीमारी की परवाह नहीं करता। तुम्हारे ससुर को इन सब बातों की चिन्ता नहीं रहती। मैं शहर जाकर एक-दो दिन के लिए केदार को देख आती हूँ।" यह कह कर अनसूया केदारनाथ के पास शहर चली गई।

उसी दिन रात को सुमति अपने पति इन्द्रनाथ से बोली- "देखते हो न माँजी का पक्षपात ? छोटा बेटा आप से अधिक पैसे कमाता है, इसलिए वह उसे अधिक प्यार करती हैं। छींक आते ही देखने चली गईं। क्या आप को भी वह उतना ही प्यार करती हैं ? एक बार

रमेश वर्मा

जब सास-ससुर दोनों देवर के घर रह रहे थे तब आप की बीमारी की खबर पाकर भी देखने नहीं आईं ।"

इन्द्रनाथ ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया । मौन रह कर सिर्फ़ सिर हिला दिया ।

कुछ दिनों तक अनसूया केदारनाथ के साथ रह कर सुमति के घर लौट आई । आकर बोली- "केदार तो दो ही दिनों के बुखार से घबरा गया था । अब वह ठीक-ठाक है ।"

सुमति भीतर से तो जल-भुन रही थी । लेकिन आंचल सिर पर सरका कर पाँव छूती हुई बोली- "दो-चार दिन और ठहर कर उनकी देख-भाल कर लेतीं । यों तो दोनों घर आप के ही हैं । जहाँ आप की इच्छा हो, ठहर जाइए ।"

एक सप्ताह के बाद अनसूया का छोटा भाई महेन्द्र लायलपुर आया । वह थोड़ी दूर पर एक गाँव में साधारण किसान था । चार-पाँच साल पहले लगातार दो वर्षों तक वर्षा न होने के कारण उसकी फसल मारी गई थी । उस वक्त अनसूया ने अपने गहने बेच कर चार हजार रुपये उसे उधार दिये थे । महेन्द्र ये ही रुपये वापस करने आया था ।

महेन्द्र ने सारे रुपये वापस करके अपनी बहन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा- "दीदी, इन रुपयों से मुझे काफी मदद मिली । इस मदद के बिना मैं कहीं का न रहता । इन रुपयों की वजह से हमारे खेत में काफी पैदावार हुई । अब कोई कठिनाई नहीं है ।" महेन्द्र

एक-दो दिन ठहर कर अपने गाँव वापस चला गया।

भाई के चले जाने के बाद अनसूया ने सुमति को बुला कर प्यार से कहा- "बेटी, इस उम्र में मुझे अब गहनों की क्या जरूरत है? केदार खुद ही काफी पैसे कमा रहा है। उसे किसी बात की तक़लीफ़ नहीं है। उससे इन्द्रनाथ की कमाई बहुत कम है। ये चार हज़ार रुपये तुम्हें काम आयेंगे। रख लो।"

सास का यह स्नेह देख कर सुमति की आँखें भर आईं। उसने सास के बारे में कुछ दिन जो पहले सोचा था, उसे याद कर वह पछताने लगी। संकोच के साथ रुपये लेकर उसने अनसूया के चरण छूए।

रात को सुमति ने ही यह खबर इन्द्रनाथ को बतायी। यह समाचार सुनकर इन्द्रनाथ बोला- "माँ जब केदार को देखने शहर गई थीं, तब तुमने माँ के बारे में क्या कहा था? याद है?

"उस समय मैं जान बूझ कर चुप रहा। मैं माँ को अच्छी तरह जानता हूँ। उनकी नज़र में हम दोनों बेटे बराबर हैं। वह जिसमें कुछ कमी पाती हैं उसे पूरा करने की कोशिश करती हैं। मेरे स्वास्थ्य के बारे में उसे कोई फिक्र नहीं होती क्यों कि मैं शायद ही कभी बीमार पड़ता हूँ। हाँ, मेरी आमदनी को लेकर उसे चिन्ता जरूर रहती है। मेरा भाई अक्सर बीमार रहता है, इसलिए उसकी छोटी-मोटी बीमारी में भी वह चिन्तित हो जाती हैं।"

इस पर सुमति दुखी होकर बोली- "मैं सचमुच माँ जी को गलत समझ गयी थी। उनके हृदय में दोनों बेटों के लिए बराबर स्नेह है।"

फिर थोड़ी देर सोच कर बोली- "हम लोगों की आमदनी जरूर कम है किन्तु गाँव में रहने के कारण ख़र्च भी तो कम है। देवर जी चाहें पैसा अधिक कमाते हों, किन्तु शहर में ख़र्च भी अधिक है। इसलिए मैं तो समझती हूँ कि माँ जी के इन चार हज़ार रुपयों में से दो हज़ार देवर जी को दे देना उचित होगा।"

अपनी पत्नी के अन्दर यह परिवर्तन देख कर इन्द्रनाथ फूला न समाया।
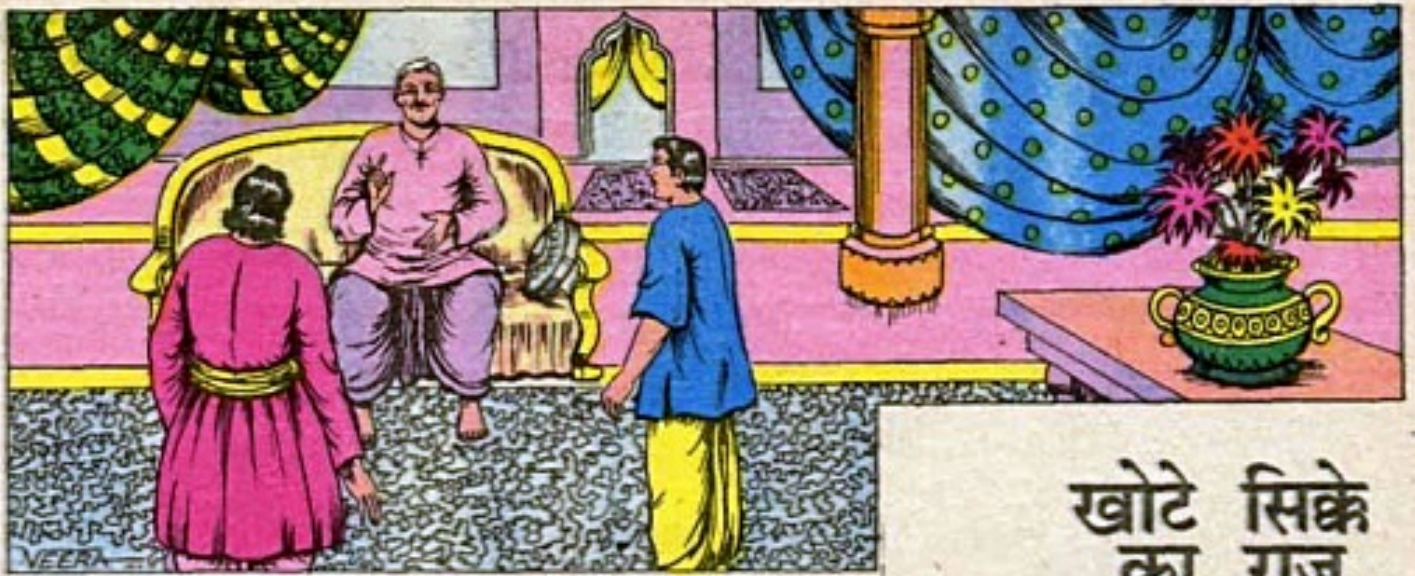
खोटे सिक्के का राज़

धारा नगर में वज्रगुप्त नाम का एक धनी व्यक्ति था। उसके दो व्यवसाय थे। एक तो सौ एकड़ भूमि की काश्तकारी थी और दूसरा आभूषण की एक दुकान थी।

उसके दो बेटे थे-श्रीकान्त और प्रशान्त। इन दोनों की मदद से वज्रगुप्त ने खेती और व्यापार दोनों में काफी तरक्की की। अब उसके पास इतनी सम्पत्ति जमा हो गई कि कई पीढ़ियों तक उसका परिवार बैठा खा सकता था।

वह धन का लालची नहीं था। इसलिए सोचा- अधिक धन की तृष्णा नाश का कारण बन जाती है। क्यों न अब गृहस्थी का भार बेटों को सौंप कर शेष जीवन काशी में जाकर बितायें।

एक दिन वज्रगुप्त ने अपना यह निर्णय अपने दोनों बेटों को बताया। इनके दोनों पुत्र बड़े ही नेक और आज्ञाकारी थे। ये पिता के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते थे। यद्यपि वे नहीं चाहते थे कि उनके पिता घर से दूर रहें, फिर भी पिता के निर्णय के सामने वे कुछ बोल न सके

वज्रगुप्त को अब एक ही चिन्ता थी कि किस बेटे को कौन-सा काम सौंपे। उसके दोनों पुत्र बुद्धिमान थे। दोनों ही परिश्रमी और सहनशील थे। लेकिन वह यह भी समझता था कि दोनों कामों के लिए अलग-अलग बुद्धि चाहिए। खेती-बाड़ी के लिए जो योग्यता चाहिए वह व्यापार के लिए उपयोगी नहीं हो सकती। इसी प्रकार व्यापार के लिए उपयोगी शान्त स्वभाव और मीठा व्यवहार खेती बाड़ी के लिए उपयुक्त नहीं होगा।

इन्हीं बातों पर विचार करके वज्रगुप्त ने एक दिन दोनों बेटों को अपने पास बुलाया। उन्होंने दोनों के हाथ में एक-एक सिक्का देकर कहा- "तुम दोनों इस सिक्के से बाज़ार जाकर अपनी-अपनी पसन्द की चीज़ खरीद कर ले आओ।"

सावित्री निगम

श्रीकान्त ने सिक्के को उलट-पुलट कर देखा और नाराज़ होते हुए पिता से कहा- "यह तो खोटा सिक्का है। इस सिक्के से तो कुछ भी नहीं मिलेगा। उल्टा अपमानित भी होना पड़ेगा।" ऐसा कहते हुए श्रीकान्त ने उस सिक्के को ज़मीन पर फेंक दिया।

प्रशान्त को भी अपने सिक्के पर सन्देह हुआ। उसने जब ठीक से सिक्के को उलटा-पुलटा तो उसका सिक्का भी सचमुच खोटा निकला। लेकिन पिता से स्पष्ट कहने का साहस उसे नहीं हुआ। उसने शान्ति से सिक्के को पिता के हाथ में देते हुए कहा- "हाट में छुट्टे पैसे शायद न मिलें, इसलिए इस सिक्के के बदले मुझे छुट्टे पैसे दे दें तो मुझे सुविधा रहेगी।"

वज्रगुप्त बहुत प्रसन्न हुआ और मुस्कुराते हुए बोला- "अब तुम दोनों को बाज़ार जाने की जरूरत नहीं है। हमारी चिन्ता दूर हो गई।" फिर पहले बेटे को बुलाते हुए कहा- "श्रीकान्त ! आज से तुम खेती का काम देखोगे और प्रशान्त दुकान देखेगा।"

श्रीकान्त ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा- "लेकिन पिताजी, अचानक आपने कैसे निर्णय लिया कि मुझे खेती बाड़ी करनी है और प्रशान्त को दुकानदारी ?"

यह खोटा सिक्का ही हमारी कसौटी था। इसीने यह फैसला किया कि किसमें किस काम के योग्य बुद्धि है।

"खेती बाड़ी में कभी-कभी मजदूरों के साथ कठोर व्यवहार करना पड़ता है। नरमी से हर समय काम नहीं चलता। श्रीकान्त के व्यवहार में यह गुण है, इसलिए यह खेती में तरक्की करता रहेगा।"

"आभूषण की दुकानदारी में सभी तरह के लोगों से व्यवहार करना पड़ता है, इसलिए कठोरता नहीं बल्कि मधुर व्यवहार और चतुराई की यहाँ बहुत जरूरत होती है। प्रशान्त के व्यवहार में ये दोनों गुण हैं। इसलिए यह दुकानदारी में बहुत सफल रहेगा।" वज्रगुप्त ने दोनों बेटों को खोटे सिक्के का राज समझाते हुए अपना फैसला बताया।

विष्णु पुराण
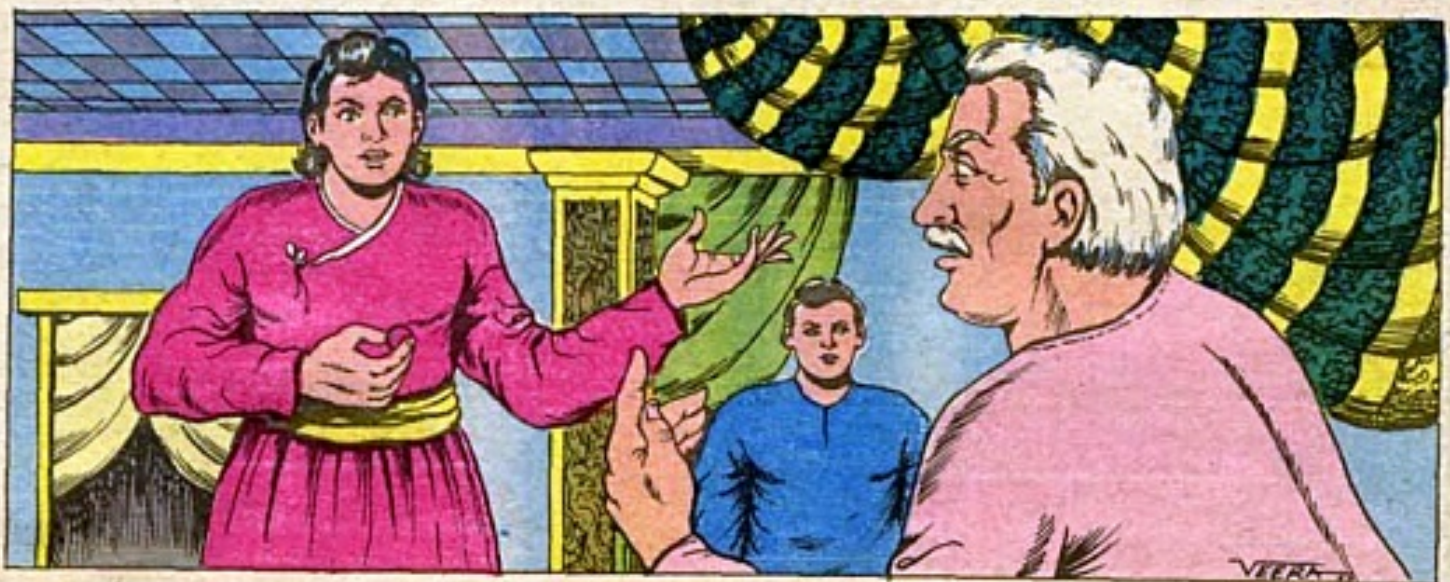
जमदग्नि मृत व्यक्ति के समान धड़ाम से नीचे गिर पड़े। रेणुका देवी अपने पति के शरीर पर पछाड़ खाकर रोने लगी। उसी समय परशुराम वन से आश्रम लौटे और इस घटना का समाचार सुनकर क्रोध से पागल हो उठे और अपना परशु चमकाते हुए महिष्मती नगर की ओर चल पड़े।

इसी बीच महर्षि भृगु घूमते हुए जमदग्नि के आश्रम में आये। उन्होंने रेणुका देवी को दिलासा दिलाया और योग बल से मरते हुए जमदग्नि ऋषि को फिर से जीवित कर दिया।

उधर महिष्मती नगर में, सैनिक धेनु को निर्दयता पूर्वक पीट रहे थे क्यों कि उनकी इच्छा के अनुसार अब वह वस्तुएँ नहीं दे रही थी। तभी प्रलय लाने वाले रुद्र के समान परशुराम वहाँ पहुँच गये। सैनिक भय से तितर-बितर हो गये। धेनु की पीठ पर हाथ रखकर उन्होंने उसे प्यार किया और निर्भय होकर आश्रम में लौट जाने को कहा। धेनु आश्रम की ओर भाग पड़ी।

इसके बाद परशुराम राजा के महल के पास पहुँच कर उसे ललकारने लगे- "अरे दुष्ट! राजा को तो प्रजा का रक्षक होना चाहिए। यदि राजा अपना कर्त्तव्य भूल कर पाप करने लगे तो उसे दण्ड देना जरूरी हो जाता है। महल से बाहर आओ और अपने पाप का फल भोगो।"

इनका विकराल रूप देख कर द्वारपाल और सैनिक भाग खड़े हुए। जो वहाँ रह गये, वे परशुराम के परशु की भेंट हो गये। इस तरह परशु को लहराते हुए काल के समान महल में

८. परशुरामावतार

F. 2—B

घुस कर कार्तवीर्य को ललकारने लगे- "अरे पापी राजा ! तू किधर छिपा है ? तेरे पाप का घड़ा अब भर गया है । जिसके राज्य में गाय, ब्राह्मण और ऋषि-मुनि पर अत्याचार हो, वह राजा हत्या के ही योग्य है ।"

कार्तवीर्य ने पहले समझा कि परशुराम कोई साधारण मुनिकुमार होगा किन्तु जब उनकी वीरता के बारे में मालूम हुआ तो वह अपने हजारों हाथों से परशुराम पर टूट पड़ा । दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ ।

परशुराम ने कार्तवीर्य अर्जुन के सारे अस्त्र-शस्त्र खंडित कर दिये । उसके हज़ार हाथों को शाखाओं की तरह काट डाला । कार्तवीर्य बेजान धड़ के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा । उस समय उसे स्मरण हुआ कि वह तो चक्र पुरुष है और शाप वश उसने यह जन्म धारण किया है । परशुराम को विष्णु का रूप मान कर मन ही मन उन्हें प्रणाम किया और सुदर्शन चक्र में विलीन हो गया ।

परशुराम अब अपने आश्रम में लौट आये तथा पिता को जीवित पाकर उन्हें कार्तवीर्य की मृत्यु का समाचार सुनाया । यह सुनकर उनके पिता जमदग्नि ऋषि बोले- "तुमने जो काम किया है, वह मानवों के लिए उचित नहीं है । इसके प्रायश्चित के रूप में तुम्हें तप करना होगा ।"

"पिताजी ! राजा जब अपने कर्तव्य को भूल कर पाप करने लगता है तब उसे दण्ड देने का अधिकार सब को है । मैं तपस्या आप का आदेश समझ कर करूँगा, प्रायश्चित के रूप में नहीं ।" यह कह कर परशुराम तपस्या करने के लिए वन की ओर चले गये ।

इधर कार्तवीर्य के एक हजार पुत्र हैहय क्षत्रियों को संगठित करके जमदग्नि ऋषि के आश्रम पर टूट पड़े । उस समय जमदग्नि समाधि में लीन थे । सैनिकों ने ऋषि का सिर काट कर दूर फेंक दिया । रेणुका देवी ने पहले रक्षा के लिए परशुराम को इक्कीस बार पुकारा और फिर छाती पीटती हुई अपने पति के धड़ पर गिर कर बिलख बिलख कर रोने लगी । जमदग्नि का सिर लुढ़कते-लुढ़कते कुछ दूर जाकर दो

शिलाओं के बीच अटक गया । क्षत्रियों ने आश्रम में आग भी लगा दी । आग की इन लपटों में रेणुका देवी अपने पति के धड़ के साथ जल कर भस्म हो गई ।

उधर परशुराम जंगल में तप कर रहे थे । अचानक उनका ध्यान भंग हुआ और उनके कानों में अपनी माता की पुकार इक्कीस बार गूँज उठी ।

इसे अशुभ संकेत समझ वे एक ही छलांग में आश्रम को लौट आये । उस समय आश्रम धू-धू कर जल रहा था । उनके माता-पिता भस्म हो चुके थे । हैहय क्षत्रिय, आश्रम वासियों तथा आस-पास के ग्रामीणों को क्रूरता पूर्वक लूट-मार रहे थे ।

यह सब देख कर परशुराम की आँखों में प्रलय की लपटें उठने लगीं । उन्होंने शिवजी का ध्यान करके अपने परशु को हाथ में लिया और उन क्षत्रियों को कंटीली झाड़ियों की तरह काटने लगे ।

इसके बाद शिलाओं के बीच फँसे अपने पिता के सिर को छाती से लगा कर परशुराम बोले- "मेरे ह्रदय की ज्वाला से मेरे आँसू सूख गये हैं । मैं क्षत्रियों के रक्त से आप का तर्पण करूँगा और उनके रक्त की धारा में आप का सिर डुबो कर आप की अन्त्येष्टि क्रिया करूँगा ।"

ऐसा कह कर परशुराम एक ऊँची शिला पर
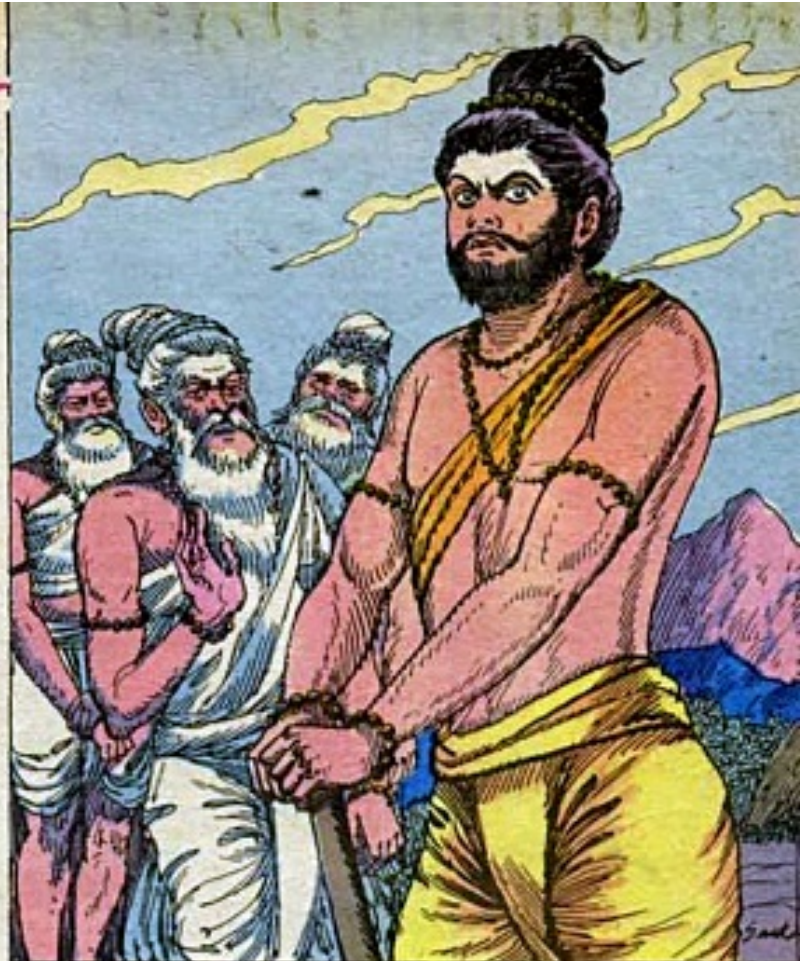
चढ़ गये और उन्होंने परशु को ऊपर उठाकर गरजते हुए इक्कीस बार प्रतिज्ञा की- "मैं इस परशु से पृथ्वी पर के सभी क्षत्रियों का अन्त कर डालूँगा ।"

उनकी भयंकर ध्वनि से दिशाएँ गूँज उठीं । उनकी इस भीषण प्रतिज्ञा को सुन कर ब्रह्मा तथा सभी ऋषि-महर्षि वहाँ पर आ गये और परशुराम को शान्त हो जाने का उपदेश दिया ।

महर्षि भृगु ने कहा- "बेटा ! भगवान स्वयं दुष्टों को दण्ड देंगे और साधु-सन्तों की रक्षा करेंगे । हम ऋषि-मुनियों को यह शोभा नहीं देता ।"

इस पर परशुराम बोले- "भगवान आसमान

से टपक कर नहीं आते। वे मनुष्य के रूप में ही जन्म लेकर इसी संसार में निवास करते हैं। हम लोगों के माध्यम से ही भगवान की शक्ति काम करती है। जब मनुष्य अपना कर्त्तव्य भूलकर दूसरों पर अत्याचार करने लगता है और जब उसका दुराचार अन्तिम सीमा पर पहुँच जाता है तब हम लोगों में से ही किसी में भगवान प्रकट होते हैं और पापियों को सज़ा देते हैं। आप मेरे पितामह हैं। समझ लीजिए कि मैं भी एक ऐसा ही व्यक्ति हूँ।'' यों कह कर परशुराम हिमालय की कैलास चोटी पर चले गये। वहाँ उन्होंने शिव जी की तपस्या की।

शिव ज़ी तपस्या से प्रसन्न हो प्रकट हुए।

इस पर परशुराम बोले- ''शिवजी की आज्ञा के बिना चींटी तक नहीं काटती। आप तो लय पुरुष हैं, सब कुछ जानते हैं। इसलिए आप को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। आप मेरी प्रतिज्ञा जानते हैं। कृपया उसे पूर्ण करने के लिए आवश्यक बल प्रदान कीजिए।''

शिवजी परशुराम को अनेक अस्त्र-शस्त्र के साथ एक दिव्यास्त्र देते हुए बोले- ''यह तुम्हारे नाम पर संसार में भार्गवास्त्र के नाम से प्रसिद्ध होगा। तुम विशेष कारण से मानव देह में जन्म लेने वाले अवतार-पुरुष हो। जाओ, तुम्हारे कार्य में कोई बाधा नहीं आयेगी।''

इसके बाद परशुराम गोलोक में कृष्ण के रूप में रहने वाले विष्णु के पास गये। कृष्ण ने उन्हें कृष्ण कवच के साथ अपनी शक्ति भर कर एक दिव्य धनुष भी दिया और कहा कि रामावतार में यह धनुष तुमसे वापस ले लूँगा।

इस प्रकार देवताओं से दिव्यास्त्र लेकर परशुराम ने क्षत्रियों का संहार करना शुरू कर दिया। तो राजाओं के दुःशासन और अत्याचार से पीड़ित प्रजा ने परशुराम का साथ दिया। कार्तवीर्य के पुत्र तथा सभी हैहय वंश के क्षत्रिय नगर छोड़कर भाग गये। परशुराम ने आग्नेयास्त्र से महिष्मती नगर को जला दिया। इकीस दिनों तक वहाँ से आग की लपटें उठती रहीं। हैहय राजाओं की राजधानी जल कर राख हो गई।

कार्तवीर्य के हज़ार बेटों ने तथा अन्य हैहय
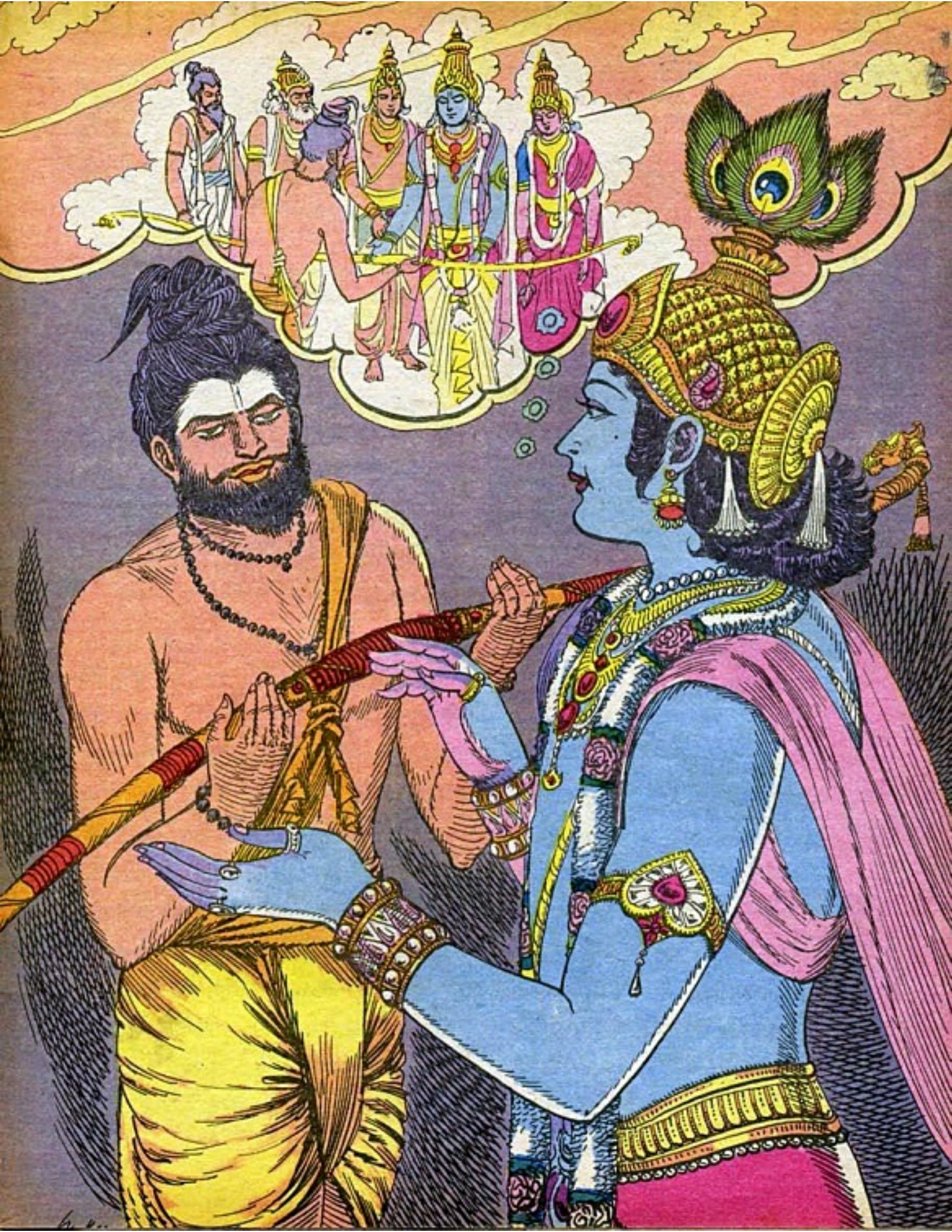
क्षत्रियों ने देश के सभी राजाओं का संगठन कर परशुराम का सामना किया। किन्तु परशुराम ने बलि के पशुओं के समान सब के सिर उड़ा दिये। फिर उनके रक्त से पाँच कुण्डों को भर कर उनमें अपने पिता जमदग्नि के सिर को नहलाया। इस प्रकार परशुराम ने पिता का तर्पण कर उनका अग्नि संस्कार पूरा किया।

जहाँ परशुराम ने रक्त के पाँच कुण्ड बनाये थे, उस स्थान का नाम शमन्त पंचक था। बाद में वही स्थान कुरु क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसी स्थान पर महाभारत के समय एक बार और खून की नदियाँ बही थीं।

पिता का श्राद्ध करने के बाद परशुराम पुनः क्षत्रियों का संहार करने निकल पड़े। ढूँढ-ढूँढ कर जहाँ भी वे मिले, सबको मार डाला। क्षत्रिय माताओं ने अपने शिशुओं को ब्राह्मणों के घरों में छिपा दिया और आत्मरक्षा के लिए स्वयं भी ब्राह्मणियों का वेश धारण कर लिया।

ब्राह्मण-परिवारों की शरण में रखे गये क्षत्रियों ने बड़े होकर फिर से अपने राज्यों का विस्तार किया। किन्तु परशुराम ने फिर सारे देश में ढूँढ-ढूँढ कर उन्हें मार डाला। इस प्रकार उन्होंने इक्कीस बार क्षत्रियों को निर्मूल कर दिया और अन्त में प्रतिज्ञा पूरी कर अपने अधीन की सारी धरती कश्यप को दान में दे दी। फिर स्वयं दक्षिण समुद्र में स्थित महेन्द्र पर्वत पर तपस्या करने चले गये।

जिन क्षत्रिय बालकों को ब्राह्मण परिवारों तथा आश्रमों में छिपा दिया गया था, कश्यप ने परशुराम से प्राप्त भूमि उनमें फिर से बाँट दी। इस प्रकार क्षत्रियों के राज्य पुनः स्थापित हो गये और उनका वंश पनपने लगा।

राजा इक्ष्वाकु के वंश में राजा रघु उत्पन्न हुए। राजा रघु इतने प्रतापी और यशस्वी हुए कि इनके नाम पर ही इनका वंश विख्यात हो गया।

इसी रघुवंश में बहुत समय बाद विष्णु ने राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र राम के रूप में अवतार लिया। उन्होंने मनुष्य के सामने आदर्श जीवन का उदाहरण रखा और मनुष्य के विकास के मार्ग में रोड़ा अटकाने वाले असुरों

का वध करके आदर्श राम राज्य की स्थापना की ।

हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष को विष्णु ने नरसिंह अवतार के रूप में मार दिया था। दूसरे जन्म में ये दोनों राक्षस रावण और कुंभकर्ण बन कर संसार को फिर सताने लगे ।

रावण ने भारी तपस्या कर ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त किया कि देवता, यक्ष, गन्धर्व आदि कोई भी उसे मार न सके। उसे पहले से ही यह विश्वास था कि मनुष्य तो उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता। वह मृत्यु के खतरे से निश्चिन्त होने के कारण बहुत अहंकारी हो गया और मनुष्य पर अत्याचार ढाने लगा ।

कुंभकर्ण का शरीर बहुत विशाल था। उसने तपस्या करके यह वरदान प्राप्त किया कि वह छः महीनों तक जागे और छः महीने सोता रहे ।

रावण ने लंका से कुबेर को भगा कर लंका और उसके पुष्पक विमान दोनों पर अधिकार कर लिया। उसने राक्षसों का संगठन कर कई अन्य लोकों को भी जीता । इससे उसका अहंकार और बढ़ गया। रावण के दस सिर थे, इसलिए यह दशानन या दशकण्ठ के नाम से पुकारा जाता था। एक बार अपनी बीस भुजाओं के बल पर घमण्ड होने के कारण इसने कैलास पर आक्रमण कर दिया। इस पर शिव जी ने अपने पाँव के अंगूठे से इसे दबा दिया।

वह एक शिला के नीचे दबकर पीड़ा से कराह उठा । तब से इसका नाम रावण भी पड़ गया ।

रावण ने शिवजी को क्रोधित जान कर उन्हें प्रसन्न करने के लिए एक-एक कर अपने सभी सिर काटकर उन्हें भेंट कर दिया। तव शिव जी इस पर प्रसन्न हो गये और वह तब से महान शिव भक्त बन गया ।

रावण जितना वीर और पराक्रमी था, उतना ही वह दुष्ट भी था। परनारी-अपहरण करने में बहादुरी समझता था। नारियों का अपहरण कर उन्हें बन्दी बनाना उसका नियम-सा हो गया था। इस पाप के कारण उसे यह शाप मिला कि यदि वह किसी परनारी के साथ बलात्कार

करेगा तो उसके दसों सिर फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे ।

मय की पुत्री मन्दोदरी रावण की पत्नी थी। वह अपने पति के हित की कामना से रावण को सद् मार्ग पर चलने के लिए समझाती रहती। उसका भाई विभीषण भी उसे पाप कर्म से हटाने का प्रयास करता। किन्तु रावण किसी की परवाह नहीं करता और दुष्टता से बाज नहीं आता ।

विन्द्याचल के दक्षिण भाग तक रावण के राज्य की सीमा फैली थी । इसके राक्षस आर्यावर्त में होने वाले यज्ञों में विघ्न डालते और यहाँ के ऋषि-मुनियों को मारते-सताते । आश्रमों और गाँवों को जलाने तथा निर्दोष लोगों को कष्ट देने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था ।

उन्हीं दिनों कुश ध्वज नामक एक राजर्षि ने वेदों के पाठ द्वारा एक पुत्री को प्राप्त किया। इसका नाम वेदवती था। वह विष्णु को अपने पति के रूप में पाना चाहती थी। इसके लिए उसने घोर तपस्या की। रावण उसे प्राप्त करना चाहता था। इसलिए उसने वेदवती से कहा- "मैं विष्णु से भी महान हूँ, इसलिए पति के रूप में मेरा वरण कर मेरे साथ लंका चल।" वेदवती ने इस पर रावण का तिरस्कार और अपमान किया। रावण ने उसका जूड़ा पकड़ कर घसीटते हुए अपने साथ ले जाना चाहा।

वेदवती ने क्रोधित हो रावण को शाप दे दिया- "अरे दुष्ट ! तूने मेरे शरीर को स्पर्श कर अपवित्र कर दिया है। इसलिए इस देह को अब त्याग दूँगी। परन्तु याद रख ! मैं अगले जन्म में तुम्हारी लंका में ही जन्म लेकर तुम्हारे नाश का कारण बनूँगी। भगवान विष्णु राम के रूप में मे वरण करेंगे।" इतना कह कर वेदवती ने योगबल से अग्नि प्रज्वलित की और उसमें जल कर भस्म हो गई ।

राक्षसों का अत्याचार समय के साथ बढ़ता गया और उनके पाप से पृथ्वी त्राहि त्राहि कर उठी। संसार के कल्याण के लिए विष्णु के अवतार का समय निकट आ गया था । इसलिए विष्णु ने मनुष्य के रूप में और देवताओं ने बानरों के रूप में जन्म लिया।

रक्षाकवच

शरद पूर्णिमा की रात थी। दुधिया चाँदनी चारों ओर फैली थी। अनन्त आकाश में फैले अपने राज्य पर चाँद इतरा रहा था।

राजा सुगुण सिंह अपने महल में शयनकक्ष से लगे छत पर चिंतित भाव से टहल रहे थे। सोच रहे थे- "पुलिन्द राज्य पर मैंने चालीस साल राज्य किया। प्रजा सुखी थी और उनका प्यार मिलता रहा। कोई अन्याय, अपराध कभी नहीं हुआ। मेरे मंत्री, कर्मचारी और प्रजा सभी अपने-अपने धर्म का पालन करते रहे। ईश्वर की सचमुच कितनी कृपा है!"

तभी उनकी नज़र नगर पर फैली हुई चाँदनी पर पड़ी और प्रसन्न होते हुए बोले- "मेरे यश की पताका इस चाँदनी की तरह सब दिन फहराती रहे।"

अचानक उन्होंने देखा कि बादलों का एक टुकड़ा चाँद की ओर झपट रहा है। उनका हृदय काँप गया। सोचने लगे- "मौत का कोई भरोसा नहीं। क्यों नहीं राज्य का भार अपने बेटे को सौंप शेष जीवन भगवद् भजन में बिताया जाये। तन, मन, प्राण में अब वह बल नहीं रहा। न मालूम कब बदनामी के काले धब्बे मेरे यश की चाँदनी को निगल जायें। दिन सदा एक से नहीं होते! आज तक मैं ने जनता के प्रेम का संपादन किया है। इस बुढ़ापे में जाकर मेरे द्वारा यदि कोई भूल-चूक हो गई तो मुझे अपयश का शिकार बनना पड़ेगा।" यों सोचते राजा महल की छत पर खड़े ही रह गए।

रात गहरी होती जा रही थी। तभी क़िले का घण्टा बारह बार बज उठा। आधी रात हो चुकी है, यह सोच कर राजा सुगुण सिंह जैसे ही अपने सोने के कमरे के द्वार पर आये कि पूरा कमरा बिजली-सा जगमगा उठा। लगा चाँद कमरे में उतर आया है। आश्चर्य से उस जगमगाहट को देख ही रहे थे कि अपने पलंग पर नज़र पड़ते ही और भी ठगे-से रह गये।

'चन्दामामा' में प्रकाशित बीस वर्ष पुरानी कहानी

अब यह चिन्ता हो रही है कि मेरे पुत्र के शासन-काल में धर्म की पता नहीं क्या दशा होगी।'' राजा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

''राजन ! आप चिन्ता क्यों करते हैं ? जिस प्रकार मैंने आप को सच्चे मार्ग पर चलाया है, वैसे ही मैं आपके पुत्र को भी धर्म का रास्ता बताती रहूँगी।'' इस प्रकार धीरज बंधा कर यशोदेवी अदृश्य हो गई।

कुछ ही दिनों के बाद सुगुण सिंह का स्वर्गवास हो गया और उनका पुत्र शील सिंह गद्दी पर बैठा। उसने अपने पिता के वृद्ध मंत्री धर्मपाल को ही अपना प्रधान मंत्री बनाया और अपने पिता की नीतियों का ही अनुसरण किया। सभी 'योग्य पिता के योग्य पुत्र' की प्रशंसा करने लगे।

कुछ वर्षों के बाद शरदपूर्णिमा की आधी रात को शीलसिंह के कमरे में भी यशोदेवी प्रकट हुई। शीलसिंह ने भक्ति पूर्वक प्रणाम करके कृतज्ञता प्रकट की। यशोदेवी ने शीलसिंह को एक दिव्य अगूंठी देकर कहा- ''यह तुम्हारा रक्षा-कवच है। जब तुम धर्म के रास्ते से भटक जाओगे तो यह अंगूठी तुम्हारी अंगुली को दबायेगी। इसे चेतावनी समझ कर तुम अपनी भूल को ठीक कर लेना, अन्यथा तुम्हें सर्व नाश से कोई नहीं बचा सकेगा।'' इतना कह कर यशोदेवी अन्तर्धान हो गयी।

वहाँ मीठी मुस्कुराहट विखेरती हुई एक दिव्य मूर्ति बैठी हुई थी। राजा को यह सब सपना-सा लग रहा था। राजा को अवाक् देखकर दिव्य मूर्ति बोली- ''राजन ! क्या आप मुझे नहीं पहचानते ?''

राजा चकित हो अपलक उसकी ओर देखते रहे। मूर्ति बोलती रही- ''मेरा नाम यशो देवी है। जानते हैं आप को धर्म पथ पर प्रेरित कर आप के यश को चारों ओर किसने फैलाया है ? यह सब मैंने ही किया है।''

राजा यह सुन कर बहुत ही प्रसन्न हुए। ''देवि ! आपने मुझे धर्मपथ पर चलाकर मेरा यश फैलाया, इसके लिए कृतज्ञ हूँ। लेकिन

शीलसिंह ने यशोदेवी की कृपा पाकर अपने भाग्य को सराहा और उनके दिये हुए रक्षा कवच को प्रसन्नतापूर्वक धारण कर लिया।

अनुभवी प्रधान मंत्री की सही सलाह और दिव्य अंगूठी के प्रभाव से शीलसिंह का राज्य धर्म के रास्ते पर चलता रहा। लेकिन युवा होने के कारण कभी-कभी शीलसिंह के मन में राज्य विस्तार का नाग फन उठाने लगता। वह सोचने लगा कि राज्य के विस्तार से राजा का यश बढ़ता है! मैं अपने पिता से बढ़कर एक महान राजा कहलाऊँगा।

धीरे-धीरे उसकी महत्वाकांक्षा बलवती होती गई और इस पर प्रधान मंत्री का संयम बिल्कुल नहीं रहा। इसके आस-पास इसके लोभ को बढ़ावा देनेवाले लोग इकट्ठे होते गये और धर्म-अधर्म का विवेक इसके स्वभाव से बिल्कुल जाता रहा।

इन सारे कुचक्रों का नेता सेनापति दुंदुभि इसका गहरा मित्र और सलाहकार बन गया। हठ और क्रूरता से अन्धा होकर शीलसिंह ने प्रधान मंत्री धर्मपाल की सलाह की परवाह नहीं की तथा दुन्दुभि के प्रभाव में आकर अपने सामन्त राजाओं पर आक्रमण कर दिया। यद्यपि अंगूठी बराबर उसकी अंगुली दबाती रही, फिर भी उसने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया

शीलसिंह का अधर्म बढ़ता गया। उसकी युद्ध की इच्छा बढ़ती गयी। छोटे-छोटे राज्यों पर उसका आक्रमण जारी रहा। युद्ध के खर्चों से खज़ाना खाली होने लगा। उसने प्रजा पर कर बढ़ा दिये।

कर वसूली के लिए प्रजा पर अत्याचार होने लगे। प्रजा दुखी रहने लगी। सभी शीलसिंह की निंदा करने लगे। युद्ध से तंग आकर सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। पिता के राज्य में जो यश की पताका फहराती थी, शीलसिंह ने उसकी धज्जियाँ उड़ा दीं।

राज्य की दुर्व्यवस्था देख कर प्रधान मंत्री धर्मपाल बहुत चिन्तित रहने लगे और कुछ ही दिनों में स्वर्ग सिधार गये। प्रधान मंत्री के मरते

ही व्यवस्था और खराब हो गई। दुन्दुभि तथा उसके अन्य दुष्ट साथी राज्य को हड़पने की साजिश रचने लगे। राज्य भर में लूट-खसोट और हत्याएँ बढ़ गईं।

इधर शीलसिंह ने अनुभव किया कि यह सब इसीकी भूल का परिणाम है। वह अपने कुकर्मों पर सिर धुनने लगा। कहने लगा- "हाय! मैंने दुन्दुभि की बात में आकर अपने ही सामन्तों से बेकार ही युद्ध किया और कर के लिए प्रजा पर भारी अत्याचार ढाये। मैंने प्रधान मंत्री की अवहेलना कर उन्हें बे मौत मार डाला। और मैं कितना अधर्मी हो गया कि अंगूठी की चेतावनी भी अनसुनी कर दी।"

तभी महल में एक दिन कोलाहल मच गया। सारे राज्य की प्रजा में भय और आतंक छा गया। लगा जैसे राज्य में कोई राजा रहा ही नहीं। सभी असुरक्षित अनुभव करने लगे।

शीलसिंह जब अपनी भूल अनुभव कर पश्चाताप कर रहा था, उसकी अंगूठी उसकी उंगली को और जोर से दबाने लगी। उसके मन में एक नयी शक्ति का जागरण हुआ और लगा जैसे वह गहरी नींद से जगा हो। उसने स्थिति पर क़ाबू पाने का फ़ैसला कर लिया।

वह कोलाहल को सुनकर महल से बाहर आया तो उसे पता चला कि उसकी भांजी को षड्यंत्रकारी फाँसी देने जा रहे हैं और वे उसे भी बन्दी बनाने के लिए इधर ही आ रहे हैं। यह सुन कर शीलसिंह की अन्तरात्मा में मानो हज़ारों सिंहों की शक्ति जाग गई और चन्द विश्वस्त सिपाहियों को लेकर विद्रोहियों से भिड़ने चल पड़ा।

उसकी अंगूठी में मानों हज़ारों सूर्यों की चमक आ गई और वह अपने अन्दर अपार बल अनुभव करने लगा। उसने शीघ्र ही विद्रोहियों को पकड़ कर बन्दी बना लिया और भांजी को मुक्त करा लिया।

उसने प्रजा के सामने अपनी भूल का अनुभव किया और धर्म राज्य की स्थापना का उन्हें वचन दिया। उनके पिता की यश-पताका फिर लहरा उठी।
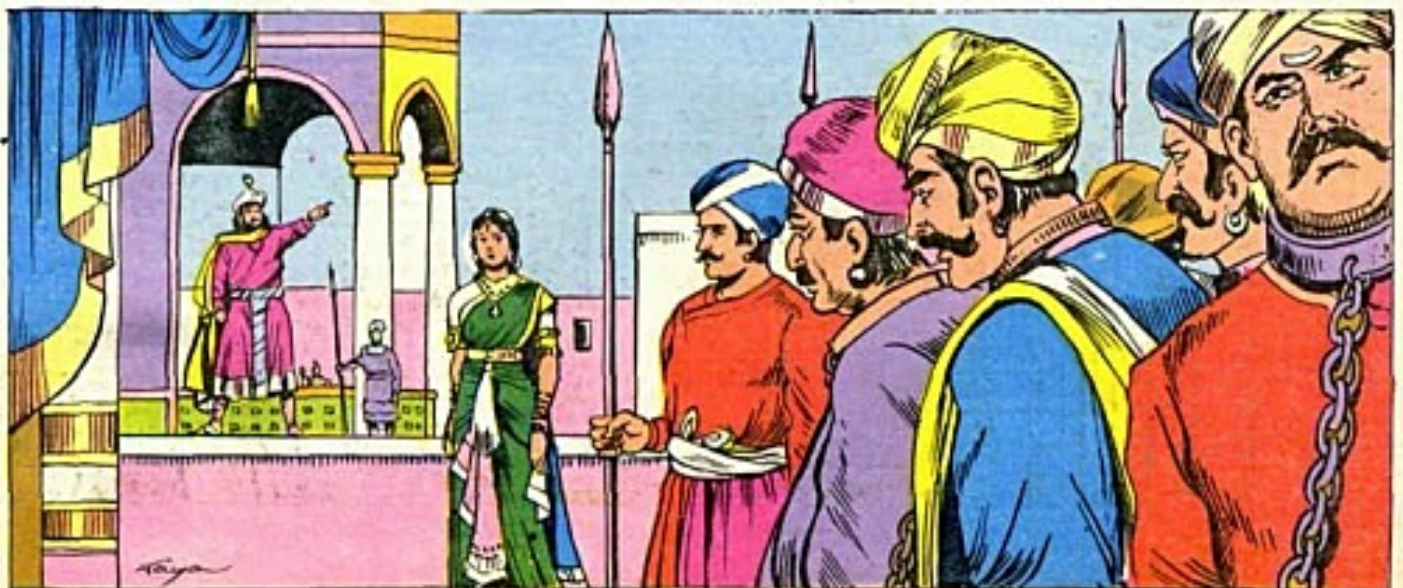
सही रास्ता

रामभद्र चन्दनपुर गाँव का मुखिया था। यह पद उसके परिवार को परम्परा से प्राप्त होता आ रहा था।

रामभद्र के दो पुत्र थे। दोनों ही ऊँची शिक्षा तथा सुन्दर स्वभाव के कारण गाँववालों के आदर के पात्र बन गये थे।

रामभद्र अब बूढ़े हो चले थे। इसलिए अपने दोनों पुत्रों में से किसी एक को मुखिया का पद सौंपना चाहते थे। उनकी नज़र में उनके दोनों बेटे इस पद के लिए सर्वथा योग्य थे। उन्हें पता नहीं चल रहा था कि यह पद किसे दें।

इनके बचपन के मित्र ज्ञानभद्र पड़ोसी गाँव के मुखिया थे। इस सम्बन्ध में विचार-बिमर्श करने केलिए रामभद्र ने ज्ञानभद्र को बुलवा भेजा। इन दोनों में किसी विषय पर चर्चा हो रही थी।

तभी रामभद्र का बड़ा पुत्र आया और बोला- "बाबूजी ! हम अपने मित्रों के साथ पड़ोस के गाँव में मेला देखने जा रहे हैं। यद्यपि मैं नहीं चाहता फिर भी हमारे मित्र छोटे रास्ते से चलने को लाचार कर रहे हैं जो कंटीली झाड़ियों और कंकड़ों से भरा है। मैं उनके इस अनुरोध को टाल नहीं सका। किन्तु छोटा भाई इसे अनुचित बताकर लम्बे और उचित रास्ते से ही जाना चाहता है।" इतना कह कर बड़ा पुत्र वहाँ से चला गया।

इस पर ज्ञानभद्र ने रामभद्र से कहा- "जो व्यक्ति मित्रों के अनुरोध पर अनुचित रास्ते से जाना चाहता है वह मुखिया पद के लिए योग्य नहीं हो सकता। आप यह पद छोटे पुत्र को ही सौंपिये।"

रामभद्र की समस्या हल हो गई। उसने छोटे पुत्र को ही अपना पद सौंप दिया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां नवंबर १९८३ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Devidas Kasbekar

Madana Gopal

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जुलाई के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो: नकली चेहरा डरेगा कौन?
द्वितीय फोटो: मेरे सामने आएगा कौन?

प्रेषिका: ज्ञान कुमारी कपूर, ६० मरियम महल, बैरकपुर, २४ परगना (पं. बं.)

पुरस्कार की राशि रु. ५० इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

क्या आप जानते हैं? उत्तर

१. कलकत्ता। २. रोम, यह सात पर्वतों पर बसा है। ३. सेनफ्रांसिसको (अमेरिका)। ४. कोलोन—मागी की श्मशान वाटिका। ५. मांट्रियल (कनाडा), नगर के सारे मार्ग साधुओं से सम्बन्धित हैं। ६. इटली का सानिया नगर, सारा नगर शिखरों से भरा है।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

हुर्रे !
यह है गोल्डस्पॉटिंग डे !
हटाओ हाथ, लगाओ दांत, तब ही दे पाओगे मात.
Trikaya GS 24.83 HIN
Fun means Goldspotting
GOLD SPOT

बातूनी जानवरों के बारे में

लाल-चीटियों (फायर-ऐन्ट) में विशेष प्रकार के ग्लैंड होते हैं, जिनसे तरह-तरह की खुशबू निकलती है— ये इन्हीं के द्वारा संचारण करती हैं। धीरे-धीरे मन्द हो जाने वाली खुशबू भोजन का रास्ता बतलाती है। शीघ्र मन्द हो जाने वाली सुगन्ध संकट की चेतावनी देती है। एक अन्य सुगन्ध द्वारा लाल-चीटी समाज के अन्य सदस्यों से पहचान बढ़ाती है, जबकि एक सुगन्ध,

चेतावनी दिये बिना, 'आम' सभा का बुलावा होती है।

पिस्सू (फ्लीस) आवाज की तरंगें इतनी ऊंचाई पर भेजकर बातचीत करते हैं कि मानव के कान तो सुन भी नहीं सकते। स्वर में उतार-चढ़ाव के लिए, पेट में जो छोटे-छोटे छेद हवा के लिए होते हैं, वे सिकुड़ते व फैलते (सीटी बजाने की तरह) रहते हैं। पीछे की ओर के सूक्ष्म बाल इन आवाजों को पकड़ लेते हैं, जिनमें

अक्सर-खाने की नयी जगह मिलने पर दावत का बुलावा होता है।

जुगनू २००० से भी अधिक तरह के होते हैं-भृंग तरह-तरह का प्रकाश फैलाते हैं। विशेष नसें एक चमकीले से रसायन का स्विच खोल देती हैं। इन प्रकाशों का प्रयोग प्रणय के संकेत देने में किया जाता है। इन २००० तरह के जुगनुओं में प्रत्येक की अपनी प्रकाश भाषा होती है। उनकी चमक

दमक द्वारा दुश्मन को भगाने में भी सहायता मिलती है।

'नाइफ' मछली आस-पास के पानी में बिजली का चार्ज सा पैदा कर देती है। अन्य 'नाइफ' मछलियां इस चार्ज को आवाज समझती हैं जो कि संगीत के स्वरों के साथ जटिल संयोगों व गूढ़ ताल में होती हैं। वैज्ञानिक इस रहस्यमय संगीत भाषा को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

जीवन बीमा आपके भविष्यको सुरक्षित रखने का सबसे विश्वसनीय तरीका है। इसके बारे में और जानकार हो जाइये।

भारतीय
जीवन बीमा निगम

1983 WORLD COMMUNICATIONS YEAR

daCunha/LIC/138/83 HN